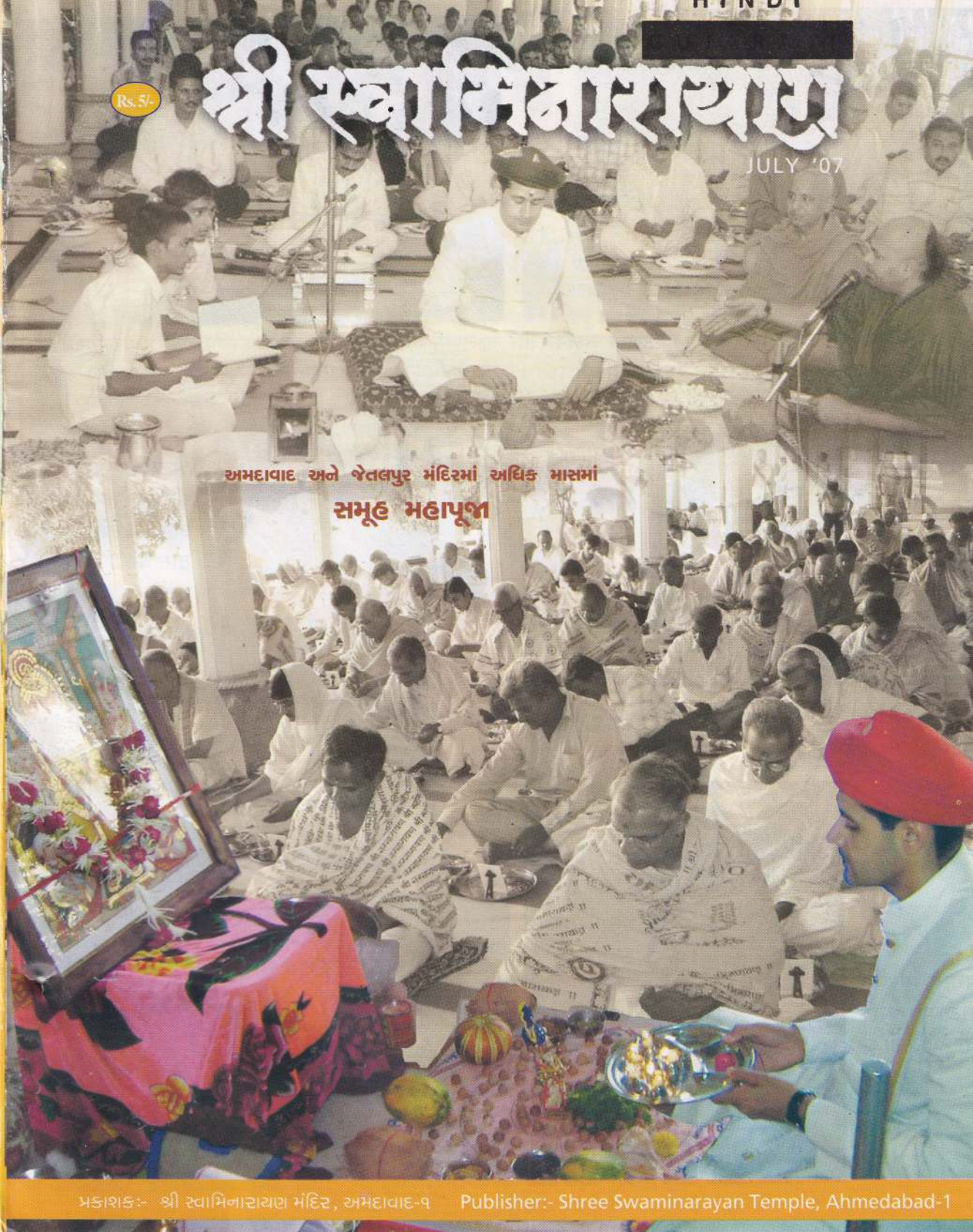
HINDI

Rs.5/-

શ્રી સ્વામિનારાયણ

JULY '07



અમદાવાદ અને જેતલપુર મંદિરમાં અધિક માસમાં

સમૂહ મહાપૂજા

પ્રકાશકઃ- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧ Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1



तलपुर मंदिर में अधिक महिने में श्री रेवती बलदेवजी
रिकृष्ण महाराज का अभिषेक करते हुए प.पू.महाराजश्री ।



जेतलपुर में कच्छ रवापर सत्संग समाज के हरिभक्तोंने प.पू. बडे महाराजश्री
श्री स्वामिनार यण म्युझियम निर्माण में चेक अर्पण करते हुए ।

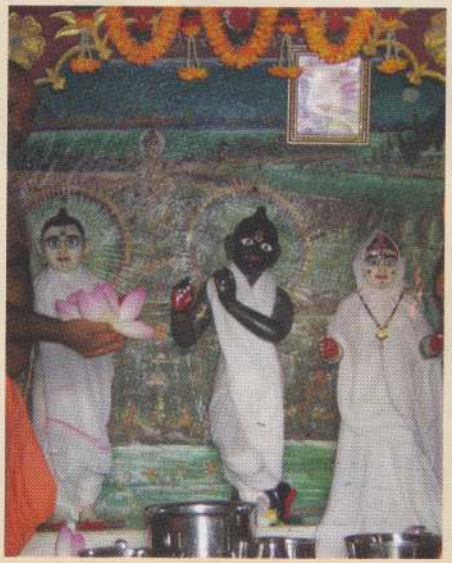


ावनगरपुरा (ता. कलोल) मंदिर में पुन: प्राण प्रतिष्ठा की
आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



अधिक महिने में
अलौकिक स्वस्थ
को अलौकिक
अपर स्वस्थों
द्वारा केशर स्नान
दर्शन ।

ऊँझा में
प.पू.ध.धु.
आचार्य
महाराजश्री की
निश्रा में कथामृत
पान करते हुए पू.
पी.पी. स्वामी ।



मरोली मंदिर में
पाटोत्सव प्रसंग
पर ठाकुरजी के
दर्शन ।





संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे
तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी(महंत स्वामी)
पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फेक्स : २२१७६९९२.
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १ अंक : ३ जूलाई -२००७

अ नु क्र म णि का

१.	अरमदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	भागवतकृतत्वसिद्धांत समझानेवाले श्रीनित्यानंदस्वामी	४
४.	स.गु. गुणातीतानंद स्वामी के मूल जन्म स्थल भादरा मंदिरमें पुन: मूर्ति प्रतिष्ठा	५
५.	श्रीजी महाराज के प्रसादी का स्थल अहमदाबाद	६
६.	गुरु - सद्गुरु	८
७.	विद्वान् चित्रकेतु	९
८.	सत्संग सुरभि : ऐसा गलुजी से हो सकता है, दूसरे से नही	११
९.	सत्संग बालवाटिका (१) पक्की निष्ठावाले का काम हो (२) कितने जीये यह महत्व का नही	१२
१०.	भक्तिसुधा (१) मामी देर करें तो ही लाना (२) उझाँ गाँव में श्रीहरि की हुई अद्भुत लीलायें (३) मानबाई (४) सत्य भक्ति (५) केशाबा का संशय दूर हुआ	१३
११.	प्रश्नपेटी	१६
१२.	अधिक मास उत्सव दर्शन	१७
१३.	समाचार वृत्तांत	२०

: संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक :
महंत स्वामी शास्त्री निर्गुणदासजी द्वारा
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए
श्री स्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित ।

अमृतधारा

तन्त्रीश्री की तरफ से.....

वचनामृत में महाराज ने संग का महत्व खूब समझाया है । मनुष्य को जैसा संग मिलता है वैसा होता है । देश, काल, क्रिया, संग, शास्त्र ये सभी उत्तम मिलें तो जीव का मोक्ष हो जाता है। विपरीत संग मिलने पर विषय भोग में या माया में फंस जाता है । अहं ममत्व का अर्थ ही मेरा - तेरा होता है । मेरे-तेरे रूपी अज्ञान के कारण ही वारंवार जन्म मृत्यु के भयानक बन्धन में फंसता जाता है । चाहे वह कितना ही क्यों न पढा हो, सत्तावाला हो, ज्ञानी हो, वैराग्यवाला हो, भक्तिवाला, त्यागवाला, कीर्तिवाला हो तो भी उसके भीतर से मैं का अज्ञान निकलता नहीं है। बल्कि मेरा घर, परिवार, धन, गाँव, जाति, मठ, मंदिर, संस्था, इत्यादि में अपनापन होने से बार-बार जन्म-मृत्यु का कारण बनता है । ऐसे अज्ञान को दूर करने के लिये मनुष्य को सत्संग करना चाहिए । सत्शास्त्र, सत्पुरुषों का समागम करके परमेश्वर की भजन करे तो ही इस जीव पर परमेश्वर की कृपा दृष्टि होगी तभी मोक्ष का मार्ग खुल सकेगा । इसके अलांवा इस संसार की आशक्ति जाती नहीं है । परमेश्वर की कृपा दृष्टि के बिना गीता वचन के अनुसार "अनेक जन्म संसिद्धस्ततो याति परां गतिः ॥" कौन जाने कितने जन्म वीत जायेंगे इसका कोई निश्चय नहीं । अनेक जन्म जन्मान्तर तक सिद्धि के लिये परमेश्वर की कृपा न हो तो मोक्ष के मार्ग पर चलना कठिन है । परमात्मा की कृपा दृष्टि प्राप्त करने के लिए उन्ही के द्वारा प्रवर्तित सिद्धान्त के अनुसार जप, तप, भक्ति, आराधना करे एवं मर्यादा नीति नियम का पालन करे तो परमात्मा की दृष्टि प्राप्त होगी, अन्यथा अन्यत्र किया गया श्रम, पानी पीटने के समान है । इसलिए सम्प्रदाय में चली आ रही प्राचीन परम्परा की मर्यादा में रहकर आत्यंतिक मोक्ष को प्राप्त किया ज सकता है । इस मार्ग पर चलना ही अपना कर्तव्य है । इसी में मनुष्य जन्म की सार्थकता है ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

– *शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का*

जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

जून -२००७

१. हरिपुरा (स्वास्की-ईडर देश) गाँव में नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा अपने वरद् हाथो से किये ।

५. कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में सभा प्रसंग पर पधारे ।
कर्म शक्ति श्री स्वामिनारायण मंदिर में पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।

७. ऊँझा गाँव में श्री लक्ष्मणभाई देवकरणदास के यहाँ श्रीमद् भागवत पारायण प्रसंगपर पदार्पण, तथा श्री वसंतभाई देवचंदभाई पटेल के यहाँ पदार्पण ।
श्री स्वामिनारायण म्युझियम नारायणपुरा में आयोजित रात्रि पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।

८. श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर अधिक मास में श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज का महाभिषेक पाटोत्सव अपने वरद् हाथों से किये ।

९. कलोल श्रीनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर श्री धरमाभाई पुस्त्रोत्तमदास पटेल की तरफ से आयोजित श्री गणपतिदादा के यज्ञ में पदार्पण ।

१०. सिद्धपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर (नूतन) में संत निवास के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क मे पारायण की पूर्णाहुति प्रसंग पर पदार्पण ।

११. अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के शुभ सांनिध्य में अधिकमास के निमित्त आयोजित समूह महापूजा में विराजमान श्री रमेशभाई गोविन्द काछडिया संचालित श्री डिवाईन इन्टरनेशनल स्कूल के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण निकोल - नरोडा रोड ।
श्री नरेन्द्रभाई पटेल के "श्रीहरि बंगला" में पदार्पण पालडी ।

१२. श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर में पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में रात्रि कथा प्रसंग पर पदार्पण ।

१३. कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में मास्तियज्ञ की पूर्णाहुति हेतु पदार्पण ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर होमात्मक महापूजा प्रसंग पर पदार्पण ।

१४-१५. अंजार (कच्छ) में पदार्पण ।

१६. प्रांतिज श्री स्वामिनारायण मंदिर में (बहनों के) श्री घनश्याम महाराज की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा अपने वरद् हाथों से किये ।

१७. कृष्णनगर कटोसण (जि. गान्धीनगर) श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण ।

१८. श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज की पुनः प्राण प्रतिष्ठा अपने वरद् हाथों से किये ।

२० जून से १५ जुलाई केनेडा एवं अमेरिका के धर्म प्रवास में पदार्पण ।

भागवत का तत्व सिद्धांत समझानेवाले श्री नित्यानंद स्वामी

- प्रो. सूर्यकांत भट्ट (भुज)

श्री विष्णु शर्मा नामका यजुर्वेदी ब्राह्मण उत्तर भारत के लखनउ के दतीया गाँव में रहते थे । वे जितने विद्वान थे उतने ही धनवान थे । उनके दो पुत्र थे एक गोविंद दूसरा दीनमणि । दीनमणि शर्मा को पढने की ज्यादा इच्छा थी इसलिए उन्हे उच्चाभ्यास के लिए पिताजीने काशी भेजा । वहाँ पर शास्त्रो का अभ्यास किया । शास्त्रो को पढने के पश्चात उन्हे तात्विक विचार आया कि धर्मादि से युक्त संत के संग से ही भगवान की प्राप्ति होती है तथा मुक्ति मिलती है । इसलिए ऐसे संत को खोजना चाहिए । जिससे भगवान मिले । पहले ब्रदिनारायण वहाँ से जगन्नाथपुरी, रामेश्वर आदि बडे तीर्थो में गये कई संत, महात्मा से मिले किन्तु मन माना नही इसलिए द्वारका की तरफ प्रयाण किये ।

इस दौरान विसनगर में श्री सहजानंद स्वामी तथा उनके संतोकी महिमा कई लोगो के मुख से सुनी । पूछने पर पता चला कि सहजानंद स्वामी फणेणी मे है । द्वारका की जगह फणेणी पहुँचे वहाँ सतानंद स्वामी ने कहा महाराज सिद्धपुर पधारे है । वहाँ से ऊँझा यायेंगे । हम वहाँ जा रहे है इसलिए साथ रहना । शतानंदजी के मुख से महाराज की सर्वोपरिता की बात सुन हृदय आनंद से भर गया । उंझा जाते हुए उनका मन खूब प्रसन्न हुआ । उझा गाँव के तालाब के किनारे श्रीहरि सभा में बीराजमान थे ।

श्रीहरि के दर्शन के साथ ही वे देह स्मृति भूल गये और दंडवत प्रणाम किये फिर भी श्रीहरिने उन्हे गले लगा कर साथ रहने की आज्ञा की । दीनमणी शर्मा को श्रीहरिने संत दीक्षा दी और नित्यानंद स्वामी नाम धारण करवाया ।

श्रीजी महाराजने उनको नांदोल के श्री पुरुषोत्तम भट्ट जो विद्वान शास्त्रकार थे उनके पास न्याय, सांख्य, वेदांत आदि में पारंगत होने के लिए भेजा । किन्तु उन्हे अभ्यास करवाने वाले भट्टजी उनकी बुद्धि प्रतिभा, तेजस्विता को पहचान गये । उन्हे लगा मुझे इनसे कुछ शास्त्रो का चिंतन करना चाहिए । ये मानवीय बुद्धिधारी नहीं है ।

कुछ समय के अभ्यास के पश्चात लोया गाँव में नित्यानंद स्वामी श्रीजी महाराज को मिले । उन्होंने कितना अभ्यास के पश्चात प्रेमपूर्वक पूछा । जो अभ्यास किया वह सब कह दिया तब श्रीजी महाराजने पूछा की भागवत का तत्व सिद्धांत क्या है ? स्वामीजीने तुरंत प्रत्युत्तर दिया कि - "मनुष्य कितना भी महान हो, मुक्त हो, योगी होने के बावजूद माया उसे अवश्य बांध कर रखती है । एकमात्र परमात्मा ही निर्विकल्प निराकारी रह शकता है । और वह परमब्रह्म परमात्मा की आज्ञा धर्म ज्ञान वैराग्य और भक्ति युक्त हो तो मुष्य को माया का बंधन नही रहता । वह परब्रह्म परमात्मा की आज्ञा धर्म, ज्ञान, वैराग्य तथा भक्तिपूर्वक रहे तो मनुष्य को मायाबंधनस्म नही रहती यदी कल्याण तथा मोक्ष का मार्ग है । प्रत्युत्तर से श्रीहरि खूब प्रसन्न हुए । वह श्रीहरि के साथ रहकर अनेक ग्रंथो की रचना किये । उन्हो ने ही संस्कृत ग्रंथ बनाये तथा श्रीहरि दिग्विजय की रचना की ।

एकबार मुक्तानंद स्वमी के साथ उन्हे श्रीहरिने अहमदाबाद भेजा । दरियाखान घुम्मट में संतो को पढाना भिक्षा मांगना उसे पानी में मिलाकर गोले बनाना और उसमें से एक ही गोला खाने का । चार पांच महीने पश्चात श्रीहरिने उन्हे गढणा बुलाया लक्ष्मीबाग में उनेक पास अभ्यास किया । श्रीहरि की आज्ञा से एकबार शास्त्रार्थ करने बडौदा में गायकवाड सरकार की विद्वानो की सभा में गये थे और विजयी हुए थे ।

श्रीजी महाराज स्वधाम पधारे उसके बाद अमदाबाद में वैष्णवाचार्य तथा अन्य संप्रदाय वाले स्वामिनारायण संप्रदाय को कुत्सित करने के लिए इकठ्ठा हुए । चारो तरफ से विद्वनो को शास्त्रार्थ कर स्वामिनारायण संप्रदाय को दीन करने के लिए एकत्रित किया । गायकवाड के विद्वान जब आने की आज्ञा लेने गये तब उन्होने स्पष्ट कह दिया कि "आप जा रहे तो जाओ । किन्तु आप अपनी विद्वता को विगाडने जा रहे ही इतना समझना ।" उस समय नित्यानंद स्वामी बडौदा में थे । वे भी शास्त्रार्थ के लिए अहमदाबाद जा रहे

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १०

स.गु. गुणातीतानंद स्वामी के मूल जन्म स्थल भादरा मंदिर में पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा

- जगतप्रकाशदासजी

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान के समकालीन नंद संतो में अग्रगण्य स.गु. गुणातीतानंद स्वामी के पूर्वाश्रम का मूल जन्मस्थल जामनगर था। उस जामनगर जिले के भादरा गाँव में मूली श्री राधाकृष्णदेव देश के मंदिर का निर्माण वर्षो पहले हुआ था।

यह मंदिर अत्यंत जीर्ण होते ही हमारे परम पूज्य ध.धु. आचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री और वर्तमान प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रादजी महाराजश्री के संकल्प प्रेरणा और आशीर्वाद से कच्छ बलदिया के सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव गादी के निष्ठावान प.भ. लक्ष्मणभाई राघवाणी परिवारने बहुत ही श्रद्धा और मेहनत से भादरा में भव्य श्री स्वामिनारायण मंदिर का पुनः निर्माण किया। हमारे दोनो परम पूज्य आचार्य महाराजश्री के संकल्प अनुसार ही मंदिर का निर्माण किया गया। जिस में अहमदाबाद, मूली और कच्छ देश के हरिभक्तो ने आर्थिक सहयोग किया। बहुत ही कम समय में प.भ. करशनभाई राघवाणीने मंदिर का काम पूर्ण किया। उसके बाद मूली मंदिर के महंत स्वामी और सभी संत मंडल प.पू.धधु. आचार्य महाराजश्री के पास मूर्ति प्रतिष्ठा के मुहूर्त के लिये पधारे थे। जो मुहूर्त निर्धारित हुआ था उसी समय में प.पू. बडे महाराजश्री का अमेरिका के धर्मप्रवास का कार्यकर्म निर्धारित था। भादरा के हरिभक्तो ने इस उत्सव में प.पू. आचार्य महाराजश्री के साथ प.पू. बडे महाराजश्री और धर्मवंशी समस्त परिवार यहाँ उपस्थित हो तभी उत्सव किया जायेगा ऐसा निर्धारित किया। वास्तव में प्रत्येक हरिभक्तों के मन में धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री की कितना महिमा माहात्म्य है यह दिखाई देता है। इस प्रकार मूर्ति प्रतिष्ठा का मुहूर्त दि. १२-५-०७ को निर्धारित हुआ। और सभी संत-हरिभक्त उत्सव की तैयारी में लग गये।

दि. ८-५-०७ से "श्रीमद् सत्संगिभूषण" पंचान्ह पारायण शा. घनश्यामप्रकाशदासजी और शास्त्री रामकृष्णदासजी के (धांगध्रा) के वक्तापद पर शुरुहुई। इस प्रसंग पर बहनो के गुरु प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरूपा गादीवालाश्री पधारी थी। सभी बहनो को दर्शन आशीर्वाद का दिव्य सुख प्रदान किया था।

दि. ११-५-०७ के दिन श्रीहरि के दोनो अपर स्वरूप परम विश्व वंदनीय प.पू. बडे महाराजश्री और प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधारे तब भादरा गाँव के हरिभक्तो ने और संतोने श्रीहरि के दोनो अपर स्वरूपों का भव्याति भव्य स्वागत किया था।

उसके बाद दोनो परम पूज्य आचार्य महाराजश्री के शुभ हाथों से सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा विधिपूर्वक धूमधाम से संपन्न हुई।

कथा मंडप में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने व्यास पूजन करके आरती उतारकर कथा की पूर्णाहुति की। उसके बाद यज्ञ मंडप में पधारकर श्रीफल होम कर यज्ञ विधिकी पूर्णाहुति की।

प्रासंगिक सभा में मंदिर निर्माण में जिनका मुख्य योगदान था। ऐसे कच्छ बलदीया के कृपापात्र प.भ. लक्ष्मणभाई राघवाणी प.भ. प्रेमजीभाई राघवाणी, प.भ. करशनभाई राघवाणी, और अन्य सेवा प्रदान करनेवाले हरिभक्तोने प.पू. बडे महाराजश्री और प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन-आरती-अर्चन करके दिव्य आशीर्वाद प्राप्त किया था। मूली, अहमदाबाद और अनेक धामों से पधारे विद्वान संतोने भादरा गाँव का इतिहास कहा स.गु. गुणातीतानंद स्वामी के पवित्र जन्म स्थल पर वर्षो पहले मंदिर निर्माण हुआ था। जो जीर्ण होते ही इस नूतन भव्य मंदिर का निर्माण हुआ और उसमें श्रीहरि के छठ्ठे और सातवे वंशज के वरद् हाथों से मूर्ति प्रतिष्ठा हुई। परंतु यह भूमि, और मंदिर तीर्थस्थ बन गया है। हमारे श्री नरनारायणदेव गादी के मूली, भूज तथा अहमदाबाद देश में हुए श्रीहरि के समकालीन नंद संतो के जन्म स्थलो पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से शिखरबद्ध और भव्य हरि मंदिर का निर्माण किया गया है। इस प्रकार ऐसे अलौकिक स्थानों पर भव्य मंदिर के निर्माण का अलौकिक अभियान चल रहा है।

अंत में सभीने आतुरता से जिनकी प्रतीक्षा कर रहे थे ऐसे हमारे दोनो प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी संत हरिभक्तो को स.गु. गुणातीतानंद स्वामी के मूल जन्म स्थल पर मंदिर के निर्माण बाद सभी हरिभक्त गण ऐसे अलौकिक तीर्थ स्थल का दर्शन करने अवश्य आवें और मूली श्री राधाकृष्णदेव देश के इस मंदिर में सेवा करने वाले सभी हरिभक्तो का मंगल हो ऐसा दिव्य आशीर्वाद और सलाह प्रदान किये थे।

श्रीजी महाराज के प्रसादी का स्थल अहमदाबाद

- गोरधनभाई सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

प्रसादी के श्री नरनारायणदेव एवं अन्य देवों की महिमा उत्तराभिमुख श्री नरनारायणदेव के मंदिर के गर्भगृह में श्री नरनाराणदेव की दिव्य अलौकिक आभा विखेरती हुई मुख्य प्रतिमा स्थापित है। दोनो मूर्तियां चतुर्भुज हैं। उनके हाथों में समान आयुध हैं। नीचे के हाथ में शंख धारण किये है। समभंग स्थिति में सुशोभित मूर्तियों की बनावट-पतली कटी, विशाल स्कंध, विशाल वक्ष: स्थल, दिव्य मुखाकृति, मस्तक के ऊपर का वेस्टन आकर्षक है। वस्त्रालंकारो में कान में वलयाकार कुंडल, हाथ में कंकण, एवं केयूर, यज्ञोपवीत, गले में चरण तक लटकती कलात्मक वनमाला इत्यादि से अलंकृत किया गया है। प्रत्येक मूर्तियों के दोनो तरफ वामन कद की सनकादिकों की चार मूर्तियां है।

मध्य गर्भगृह के पूर्व तरफ गर्भगृह में तीन सीढी की ऊंचाई पर, उच्च वेदिका पर, कलात्मक सिंहासन पर श्री राधाकृष्णदेव की प्रतिमा स्थापित है। काले पत्थर में से महाप्रभु श्री कृष्ण की प्रतिमा निर्मित है, वाम भाग में सफदे पत्थर में से राधाजी की मूर्ति निर्मित है।

मध्य गर्भ से पश्चिम तरफ के गर्भगृह में ऊचीं वेदिका पर सुवर्ण मंडित सिंहासन पर समभंग स्थिति में खडे धर्म-भक्ति तथा हरिकृष्ण महाराज की द्विभुज प्रतिमायें स्थापित हैं। श्रीहरि इस मंदिर में प्रतिष्ठा विधि करने के लिये संवत १८७८ माद्य महीने में ब्रह्मचारी, साधु, पार्षद एवं हरिभक्तों के साथ जेतलपुरसे पधारे, उस समय सभी को साथ लेकर कांकरिया तालाब के किनारे पडाव डाले। वहाँ से मंदिर के निरीक्षण हेतु भव्य सवारी के साथ रायपुर दरवाजा, माणेकचौक होकर नवावास में आये। नगरवासी श्रीहरि के स्वागत हेतु गलियों को सजा दिये थे। इस के साथ श्रीहरि के दर्शनार्थ रास्ते पर लोग उमड पडे छे। श्रीहरि मंदिर का निरीक्षण करके प्रभावित हो गये, शिल्पियों को पगडी एवं दुपट्टा तथा दो सेर के सोने की कंठी पहना कर आशीर्वाद दिये।

श्रीहरि आनंद स्वामी को पहले ही कह रखे थे कि अहमदाबाद में हमें नरनारायणदेव को प्रतिष्ठित करना है। श्रीमद् भागवत पुराण में, वायुपुराण में महाभारत में, विष्णुपुराण इत्यादि में श्री नरनारायणदेव को भरत खंड का राजा कहा गया है। उस में भी भरत खंड के लिये उपास्य देव के रूप में श्री नरनारायणदेव को बताया गया है। नरनारायणदेव तपस्वी है। इसलिये अहमदाबाद का मंदिर कलामय एवं भव्य होते हुए आकर्षक है। नरनारायणदेव बदरीवन में जिस तरह दर्शन देते है वैसा ही यहाँ दर्शन दें ऐसा मंदिर बनाना है। ऐसी ही नरनारायणदेव की मूर्ति लाने के लिये चार संतो को तथा हीराजी नामक सलार एवं एक पार्षद कमा भगत इत्यादि को आज्ञा किये। उन सभी को श्रीहरिने प्रसादी का हार दिया। वे डुंगारपुर जाकर चार मूर्ति तैयार कराये। उसमें दो मूर्तियां दो गज की, एवं दो सवा गज की ऊँची थी। गुलाब नामक सलाट से मूर्ति तैयार कराई थी। चार मास में मूर्ति तैयार हुई थी। प्रतिष्ठा महोत्सव में मूर्तियाँ आ नही सकीं। आनंदानंद स्वामी की चिंता बढने लगीं। उसी समय श्रीहरि की इच्छा से देवता लोग ऊँट गाडी में भरकर मूर्तियों को ले आये। आनंदानंद स्वामी को सौंपकर अदृश्य हो गये। सं. १८७८ फाल्गुन शुक्ल-३ रविवार ता. २४-२-१८२२ को श्री नरनारायणदेव के प्रतिष्ठा का दिन था। उसके एकदिन पूर्व अहमदाबाद में लाखों की जन मेदनी एकत्रित हो गयी। पादशावाडी तथा सरकारी हुकूमत के बंगीचों में मकानो में तथा कांकरिया के पास रहने की व्यवस्था की गयी।

जहाँ पर नरनारायणदेव की मूर्ति थी वहीं पर श्रीहरि मुक्ति मुनि जैसे बडे संतो को साथ लेकर दर्शन करने गये। स्नपन क्रिया के बाद मूर्तियों को पूर्वाभिमुख खड़ा किया गया था। मस्तक पर रुमाल बंधी थी। जिसे देखकर श्रीहरि खूब प्रसन्न होकर प्रसंशा करते हुए कहने लगे कि संत-हरिभक्तो के हित के लिये नरनारायणदेव नैष्ठिक ब्रह्मचारी है। ये प्रगट आये हैं ऐसा सभी लोग समझना। स्वामी के गुण सेवक में आते हैं। इसलिए उनकी सेवा से अपने व्रत का पोषण मिलेगा। श्री नरनारायणदेव की वस्त्राभूषण, वाहन, भवन, भूमि, भोजन फल, पुष्प इत्यादि से जो एकबार भी पूजन भाव से करेगा उसे अनंतफल मिलेगा। नरनारायणदेव प्रगट स्म हैं। प्रगट स्म विचरण करते हुए श्रीहरि को जो नहीं मानेंगे उन्हें भी श्री नरनारायणदेव द्वारा पोषण मिलता रहेगा।

मंदिर के सामने सुन्दर मंडप तैयार किया गया था। बीच में वेदी बनी थी। वेदिया विप्र हरिभाई, उमरेठ के खेडा बाल विप्र हरिभक्त थे। श्रीनगर तथा हलवद के एकसौ आठ विद्वान ब्राह्मणो को यज्ञ में बुलाया गया था। मुहूर्त के

अनुसार वेद मंत्र बोलकर कुंड में अग्निको प्रगट किया गया । देव की मूर्तियो कों मंडप में लाया गया । प्रतिष्ठा विधि कराने वाले ब्राह्मण मंत्र बोल रहे थे । उसी समय श्रीहरि पंडितो के पास आये, ब्राह्मणो ने आसन दिया । मुहूर्त प्रतिष्ठा का समय जब आया तब नरनारयणदेव को अपनी बांहो में भरकर सिंहासन पर उत्तराभिमुख प्रतिष्ठित किये । उस समय ऐसा लग रहा था जैसे श्री नरनारायणदेव-श्रीहरि के साथ चलकर सिंहासन तक आये हों । बाद में स्वयं श्रीहरिने राधाकृष्णदेव की तथा धर्म भक्ति एवं स्वयं का स्वरूप श्रीहरि कृष्ण महाराज की प्रतिमा को प्रतिष्ठित किया । दरवाजा बन्द था उस स्थिति में सभी मूर्तियों को प्रतिष्ठित किये । ब्रह्मचारियोंने श्रृंगार किया । वस्त्राभूषणो से आच्छादित किया । न्यासादिक सभी विधि स्वामिनारायण भगवान स्वयं अपने हाथों से किये । मंदिर के बाहर लाखों भक्तजन स्वामिनारायण मंत्र की धुनि कर रहे थे । उस समय आकाश से देवोने पुष्प वृष्टि की । ब्राह्मणो की वेद ध्वनि के साथ मंदिर का पट खुला । स्वामिनारायण भगवान स्वयं मुख्य पीठ पर विराजमान श्री नरनारायणदेव की आरती उतारे । घंट, घडियाल, शंख, ढोल, वाद्ययंत्र बजने लगे । लक्षाधिक भक्त जयघोष करने लगे । श्रीहरि श्रीनरनारायणदेव की आरती के बाद श्री राधाकृष्णदेव की आरती उतारे, बाद में धर्म-भक्ति-हरिकृष्ण महाराज की आरती उतारे । तीनो मंदिर के भीतर से प्रकाश फैलने लगा । दर्शन के लिये भीड उमड पडी । श्रीजी महाराजने भक्तों से कहा हे भक्तों ! धक्का मुक्की मत करो यह दर्शन सदा के लिये चालू रहेगा । उसी समय से आजतक मूर्तियों में से तेज की धारा अविरत बह रही है । वही आनंद का अनुभव भक्तजन दर्शन में करते हैं । प्रतिष्ठा के बाद श्रीहरि ने कहा -

बीजी मूरति ने आजे मूरति रे,
तेमां फेर जाणजों छे अति रे ।
कां जे आ मूरति ने स्परश रे,
थयो अमाणे मारे सरस रे ॥

सम्पूर्ण विश्व में स्वामिनारायण संप्रदाय के इस प्रथम मंदिर में प्रतिष्ठा के समय अंग्रेजो ने १०० तोप फोडकर इस प्रतिष्ठा याग में श्री नरनारायणदेव के प्रति भक्तिभाव व्यक्त किया । काठियावाड के पीठवड गाँव के भक्त हजार रूपये देकर प्रभु के स्पर्श से पावन ऐसे कलश को मंदिर के ऊपर चढाया । बोटाद के दादा खाचर ने सात सौ रूपये देकर मंदिर के ऊपर ध्वजा चढाई ।

कलियुग के मनुष्य इस मूर्ति की सेवा करके सुखी होंगे इस भाव से श्रीहरिने अपने अलौकिक तेज को मूर्तियों में डाला ! ब्राह्मणों को मनवांछित दक्षिणा दिये । सभा में भक्तों से कहने लगे कि आप सभी सावधान होकर हमारे वचन सुनो । पुरूषोत्तम श्रीकृष्ण हमारे इष्ट देव है । वेही सभी के कल्याण के लिए इस पृथ्वी पर प्रगट हुए हैं । धर्म एवं मूर्ति ने अत्यंत तप किया, जिस तप के प्रभाव से भगवान नर-नारायण इन दो रूपों में प्रगट हुए बाद में भरतखंड के कल्याणार्थ बदरिकाश्रम में अखंड विराजमान हैं । आज भी भक्तों के लिए ही तप कर रहे हैं । बदरिकाश्रम में जाना अत्यंत कठिन है । परंतु हे भक्तों ! इस मंदिर में आकर श्री नरनारायणदेव का दर्शन करोगे तो बदरिकाश्रम की यात्रा का सद्यः फल मिलेगा । जब ब्रह्मा शिव, इन्द्रादिक देवो ने प्रार्थना की थी उस समय नर-नारायण अर्जुन-कृष्ण के रूप में प्रगट हुए थे । उन्हीं नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा । सभी के कल्याणार्थ किये हैं । इन नरनारायणदेव की जो प्रेम से सेवा करेंगे, दर्शन करेंगे, उनकी सभी मनोकामना पूर्ण होगी । श्री नरनारायणदेव की प्रार्थना से पुत्र, धन, विद्या, इत्यादि की प्राप्ति होगी । सभी मनोरथ पूर्ण होगे । जो पंडित इस मंदिर में गीता, भागवत, वासुदेव माहात्म्य या गायत्री मंत्र का पुरश्चरण या पाठ करेंगे उन्हें सम्पूर्ण फल मिलेगा । जो जप-तप करेगा, पाटोत्सव करायेगा, उन्हें अक्षय फल की प्राप्ति होगी ।

श्रीहरिने कहा हे भक्तों ! आप लोगों को दिखाई नहीं देता होगा, लेकिन आकाश में ३३ करोड देवता यह कह रहे है कि हे प्रभु ! हम भी प्रतिदिन नरनारायण का दर्शन करने आयेंगे । यह सभी दृश्य वडोदरा के शामल भक्त समाधि में देख रहे थे । इस बात को शामल भक्त सभा में कहे । बाहर के भक्त यदि पूर्णिमा को भी दर्शन करेंगे तो उन्हें प्रतिदिन के दर्शन का फल मिलेगा । जो बहुत दूर रहते हों वे पूनम को न आशकें तो वर्ष में एकबार नरनारायणदेव के पाटोत्सव के दिन दर्शन करने पर वर्ष भर के दर्शन का फल मिलेगा । जो श्रद्धा पूर्वक प्रतिदिन दर्शन करेगा, वह सभी प्रकार के सुख का इस धरती पर भोग करके अंत में भगवान के धाम में जायेगा । विदेश में रहने वाले भी पाटोत्सव के दिन दर्शन करके सर्व सुख प्राप्त करेंगे ।

श्रीहरिने श्री नरनारायणदेव की एवं अपने स्वरूप एकता का भाव बताते हुए कहा कि "श्री नरनारायणदेव हमारे ही स्वरूप है । उन्ही के रुपमें हम जीव मात्र का कल्याण करने के लिए प्रगट हुए हैं ।

इसलिए हमारे में एवं नरनारायणदेव में कोई भेद नहीं है ।

उत्तराभिमुख सुंदर, दृढ, अचल, सम्पूर्ण स्थापत्य कला से निर्मित यह मंदिर सर्वोत्कृष्ट कला का धाम है ।

गुरु - सद्‌गुरु

- प्रो. महादेव धोरियाणी (राजकोट)

यहाँ पर गुरु का अर्थ आचार्य है। अपनी परम पवित्र संस्कृति में गुरु पूजन अर्थात् आचार्योपासना की एक मधुर परंपरा है। यह संप्रदाय में धर्मवंशी की परंपार तथा प्रणालिकानुसार आचार्यश्री का पूजन, आदर्शो का पूजन, उनके ज्ञान का पूजन, ब्रह्मज्ञान का पूजन, सत्य का पूजन, अनेक अनुभवो का पूजन, विचारो का पूजन तथा उनके देह में विदेही आत्मा है। परमब्रह्म पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण है उनका पूजन है।

त्रिवेणी संगम अगर कोई है तो वह श्री नरनारायणदेव, प.पू.ध.धु. आचार्यश्री तथा हरिभक्तों का संगम है। जहाँ देव होते है वहाँ आचार्य तथा भक्त होगे ही। और जहाँ देव है वहाँ आचार्य तथा भक्त होगे ही।

गुरु भक्ति का तात्पर्य है ध्येय भक्ति। गुरु (आचार्य) हमे ज्ञान सिंहासन पर ले जाता है। और हमे वह उस ध्येय से एकस्म कर एकाकार अस्तित्व का आस्वाद कराते है। आचार्य की महिमा महत्व जानाना मुश्किल है। उनकी उपासना (उप=पास तथा आसन-बैठना) में तो समग्र शंकाओ का समाधान है। बोले विना गुरु सिखा देते है। तथा पूछे बगैर ही शिष्य सीख जाते है।

'गुरु' शब्द में 'गु' का अर्थ अंधकार, अज्ञान तथा 'रु' का अर्थ दूर करना, नाश करना है अर्थात जो अज्ञानस्मी अंधकार का नाश करता है वही गुरु है। आचार्यश्री के दर्शन से स्पर्श, उपदेश से भक्तोका कल्याण होता है। उनके पास प्रणाम, सेवा ही ज्ञान के दो मार्ग है। विनम्रता ज्ञान की सच्छी शुरुआत है। शिष्य गुरु के पास खाली मन लेकर जाता है। जिस प्रकार कुए से पानी लेना हो तो तन झुकाना पडता है उसप्रकार गुरु यानि भक्ति ज्ञान का सागर। इस सागर से ज्ञान प्राप्त करने के लिए झुकाना जरुरी है जब तक झुकेंगे नहीं ज्ञान प्राप्त नहीं होता। "नारायण" की जहाँ कदर होती है वहाँ लक्ष्मी की कमी नहीं होती उसी प्रकार जिसके पास गुरुकृपा के रूप में धन हो वह सम्राटो का सम्राट है।

विनयस्मी आसन के बगैर ज्ञान नहीं मिलता, आध्यात्मिक गुरु से ही ज्ञान प्राप्त होता है। उससे उच्च पवित्र चीज कुछ नहीं है। वह ज्ञान पुस्तको से प्राप्त नहीं होता वाणी विचार वर्तन, स्वभाव यह व्यक्ति के मुख्य पहलूं है। जो हमेशा बदलते रहते है। किन्तु जो चारो को एक कर देता है वही प्रखर ज्ञान बन जाता है। वंदन भगवान को भी भक्त के बंधन में रखता है।

"गुरुत्वं सह गति मतिश्चले।
पूर्ण सिद्धि सहश्रियम्॥"

गुरुदेव मेरी बुद्धि श्रध्धा, चातुर्य, स्नेह तथा अपनी संपूर्णता की तरफ ले जाने वाला ज्योतिपुंज है।मैं उनके शरण में हूँ तथा उनके साथ हूँ यह मेरा सौभाग्य है। इस प्रकार की प्रार्थना भक्त के लिए प्रेरणादायी है।

'आचार्य' (गुरु) की परिभाषा क्या है?

"जीवो को संसार रूपी सागर में से पार करवाने का पुरुषार्थ करता रहे वही आचार्य"

उनके पास बडी बात यह है कि आपके जीवन में वर्ष नहीं जोडते लेकीन वर्षो में जीवन को जोडते है।

आचार्य किसे कहते है?

"आचिनोति च शास्त्राणि आचारे
स्थापयत्यति।
स्वयं आचरते यस्तु स आचार्य इति
स्मृत।"

गुरु की महिमा अपरंपार है। गुरुद्रोह कभी नहीं करना चारिए। जिसने हमे प्रेम दिया, चैतन्य दिया, ज्ञान दिया है, जीवन की दृष्टि दी है उसका द्रोह करने जैसा पाप दुनिया में कोई नहीं है।

"प्रिती बहुत संसार में,
नाना विधिकी सोय।
उत्तम प्रीती जानीये,
जो सद्‌गुरु से होव॥"

जीवन में जो शाश्वत आनंद तथा शाश्वत सत्य का ज्ञान प्राप्त करना हो तो सद्‌गुरु या आचार्य की शरण में जाना पडेगा। उनका उपदेश सुना तभी तो उसका तत्व, उसका बोध जीवन में उतरेगा।

आगामी गुरुपूर्णिमा के अवसर पर अपने श्रीहरि के अपर स्वस्म आचार्य महाराजश्री का गुरुपूजन कर जीवन को सार्थक तथा मोक्ष का भागी बनाते है।

•

विद्वान् चित्रकेतु

- चंद्रकान्त मोहनलाल पाठक (गांधीनगर)

पार्वतीजी क्रोधित हो गयी जिस वजह से उनकी आँखे लाल हो गयी । विवेक शक्ति भी खो हों इस प्रकार गुस्से में बोलने लगी । अरे मूर्ख ! बकवास बंद कर । तेरी जीभ पर संयम रख मेरे स्वामी के लिए उलटा०पुलटा बोलना तुझे भारी पडेगा । ब्रह्माजी, महर्षि भृगु, देवर्षि नारद, सनत्कुमार, कपिलजी मनु ये सभी क्या अज्ञ है । धर्मतत्व को जानते नहीं है क्या ? उन्होने कभी मेरे पति की इस प्रकार टीका या नींदा नहीं की है । तो तु कौन धर्म धुरंधर है ? मेरे स्वामी तो देवो के देव है । महादेव है । जगतगुरु है । ब्रह्माजी जैसे भी उनका ध्यान करते है । सदा शिव है और सर्वथा सभी का मंगल करने वाले है । उनके लिए ऐसी अधम वाणी का उच्चारण ? सत्ता के मद से शासन करने वाले है गर्विष्ट । तूने अपने राजकुल को लांछन लगाया है । तू अपने विनिपात की तरफ गति कर रहा है ।

महादेवी बोले जा रही थी । उनकेमन में यह था कि धूर्जटि का तीसरा नेत्र खुलेगा तथा इस जहाज के साथ उसे भस्म कर डालेगा । किंतु ऐसा हुआ नहीं । बुद्धि से परिपूर्ण अद्वेष आशुतोष तो मौन धारण कर बैठे रहे । गंभीर मूर्ति तथा निर्विकारी शिवजी कुछ बोले ही नहीं । श्रीजी महाराज ने शिवजी की प्रशंसा करते हुए कहा कि शिवजी गुणो के देवता है और हम उनका सम्मान करते है क्योंकि वे त्यागी है, योगी है औग भगवान के बडे भक्त है । शिवजी चुप रहे इसलिए पार्वतीजी कोपायमान हो गयी । हे मतिभ्रष्ट ! निर्लज्ज ! पापी ! अब तुझे सबक सिखाना ही पडेगा । मैं तुझे श्राप देती हूँ की तूं दुष्ट असुरजाति में जा कर राजा को प्राप्त कर । चलाजा यहाँ से ।

उमाजी के अंगारे जैसे शब्द हिमालय जैसे चित्रकेतु के पास आते आते ढंडे हो गये । और उसकी कोई असर नहीं हुई । शांत राजा भगवान विष्णु द्वारा दिये गये जहाज से बहार आया सती के पास आकर बोला । महादेवी पार्वती को चित्रकेतु का प्रणाम स्वीकार हो । हे माताजी ! आप क्रोधी स्वभाव की हैं मैं जानता हूँ । आपका दिया हुआ श्राप मेरे लिए मुसीबत नहीं है । मैं खुशी से उसको स्वीकार करता हूँ । मानवजीवन में आनेवाले सुख-दुःख विधि से लिखा हुआ है । उर्ध्वगति या अधोगति, सुख या दुःख, जय या पराजय, खुशी या गम ये सभी के प्रेरक तो एक मात्र भगवान श्रीहरि तो समान दृष्टि वाले है । उनका कोई अपना या पराया नहीं है । सभी के हितेच्छु है । श्रीहरि मेरे रक्षक है । तामसी प्रकृति की हे भवानी ! आपतो एक निमित मात्र हो । श्राप से आजाद होने के लिए आपको कोई प्रार्थना नहीं करुगा । आपका कोई अनुग्रह भी नहीं चाहिए । मेरे विनय से भरे शब्दो को खुशामत मत मानना । मेरी वाणी की नम्रता स्वाभाविक है । आपको प्रसंन्न करने के लिए बिलकुल नहीं है । मैने जो देखा है तथा जो योग्य लगा वही मैंने कहा है अगर आपको यह अयोग्य लगता है तो हे देवी ! मुझे क्षमा कर देना ।

यह कह कर चित्रकेतु तुरंत जहाज पर बैठकर चला गया ।

चित्रकेतु शूरसेन (मथुरा केपास) का अधिपति था । चक्रवर्ति राजा था, प्रजा प्रिय था, विद्वानो में सम्मानित था गुणवान तथा चरित्रशील था । सबसे बडी बात भगवान का भक्त था पृथ्वी माता सदैव उस पर प्रशन्न रहती थी । तथा राजा की इच्छानुसार अन्न, फल-फूल उगते थे । उसके राज्य में सभी सुखी संपति वाले थे । तथा वह एक करोड स्त्रीका स्वामी था । किंतु उसे एक पुत्र नहीं था । उसकी सारी पत्नी वंध्या थी । एकबार अंगिरा मुनि उनके राजमहल आये । राजाने सम्मान से अतिथी सत्कार किया मुनि की पूजा की और मुनि के पूछने पर पुत्र न होने का दुःख व्यक्त किया । पुत्र प्राप्ति के लिए आशीर्वाद की प्रार्थना की । अंगिराने राजा से त्वष्टा देवो का यजन करवाया, और उसका प्रसाद उनकी वरिष्ठ रानी कृतधुति को दिया । प्रसाद देते हुए एक मर्म वाक्य कहा इससे तुझे एक पुत्र होगा वह तुझे हर्ष तथा दुःख दोनो देगा ।

अंगिरा मुनि के वचन के मुताबिक ही हुआ । पुत्र जन्म से हर्ष हुआ किंतु थोडे समय में दूसरी पत्नीने ईर्ष्या से जहर देकर उसे मार डाला जिससे राजा खूब दुःखी हुए । संसार से उदास हो गये । राजकाज से उनका मन उठ गया । जीवन निरस हो गया । दिन-रात पुत्र वियोग सताता था । किंतु वह श्रीहरि का भक्त था । इसलिए उसे उससे दूर करने तथा ज्ञनोपदेश के लिए नारदजी तथा अंगिरा मुनि तुरंत आये । संसार की होनी अनहोनी को बताये राजा के हृदयमें जलती विरहाग्नि

को दूर किया । और श्रीहरि को प्राप्त करने कि विधि बतायी । पुत्र वियोग से बाहर आ कर उन्होने सात दिन निराहार रहकर सात दिन तक अनुष्ठान तथा जाप किया जिससे उन्हे महाज्ञान प्राप्त हुआ । संकल्प से ही उसे सिद्धि प्राप्त होती । उसके लिए कुछ नामुमकिन नहीं था । उसकी भक्ति से प्रशन्न होकर भगवान विष्णुने उसे एक जहाज दिया । यह समर्थ महायोगी एकबार जहाज में हरिगुण गाते गाते कुलाचल पर्वत से गुजरा वहाँ पर एक बडी सभा देखी । यह सभा के अध्यक्ष स्थान पर देवाधिदेव चंद्रमौलि थे । वे धर्म पर प्रवचन दे रहे थे । तथा गोद में अपनी अर्धांगिनी को बैठाया यह देख कामारि महेश्वर की महिमा तथा सामर्थ से अनभिज्ञ चित्रकेतु को महादेवजीकी हंसी उडाने का मन हुआ ।

चित्रकेतु ने कहा, अरे ! विधि की वक्रता तो देखो ! जो जगत्गुरु है, जो धर्म के तत्वज्ञ है, जो तपस्वी है, देवो के देव महादेव है और अभी ब्रह्मवादी की सभा में अध्यक्ष स्थान पर बैठे हैं तथा धर्म पर प्रवचन कर रहे है फिर भी शास्त्र की मर्यादा को भूल पत्नी को गोद में बैठाया है। सामान्य मनुष्य भी इस प्रकार आचरण नहीं करता है । सच ही कहा है ।

अवशेन्द्रिय चित्ताना हस्तिस्नानमिव क्रियाः ।
दुर्भगा भरण प्रायो ज्ञानं भारः क्रियां विना ॥

जितेन्द्रिय न हो और मन पर काबू न हो तो उनके द्वारा की गयी क्रिया हाथी के स्थान जैसी है । हाथी स्नान कर बहार नीकलता है शरीर पर धूल उडाता है । कुस्त्र स्त्री के शरीर पर गहने भारस्त्र होते है । इस प्रकार आचरण में नही रखा ज्ञान भी वैसा ही है ।

चित्रकेतु के जाने के पश्चात् सदाशिवने शोचा पार्वती का गुस्सा उतारना पडेगा । शिवजीने कहा, हे सुंदर कोमलांगी । दरियादलित चित्रकेतु का नीडर पना देख लिया ना ? वे श्रीहरि के बडे भक्त है । हमेशा नारायण पारायण रहनेवाले है । वासुदेव में ही मनको रखने वाले को कोई भय नहीं रहता । वे किसीसे नहीं डरते । चित्रकेतु प्रभु के प्रिय भक्त है । समान दृष्टि वाले है तथा शांत है । और मैं भी श्रीहरि का प्रिय भक्त हूँ । इसलिए मुझे उस पर बिल्कुल क्रोध नहीं आया । समदृष्टिवाले भगवान के महान भक्तो को आश्चर्य नहीं करना चाहिए । चित्रकेतु आपको श्राप देने में समर्थ था किन्तु उसने ऐसा न कर अपनी महानता दिखाई है ।

शंकर की बात सुन पार्वतीजी ठंढी हो गयी और उनका गुस्सा शांत हो गया । श्राप को ग्रहण कर चित्रकेतु दानवकुल मे त्वष्टा से दक्षिणाग्नि में नया जन्म मिला । वृत्रासुर उसका नाम था । असुर जाति में जन्म के बावजूद वे अपना शास्त्रज्ञान भूले नहीं थे । उनकी बुद्धि भगवान से विमुख नहीं हुई थी । श्री व्यासमुनि लिखते है जो मनुष्य प्रातः उठ कर श्रद्धा से श्रीहरि का स्मरण कर विद्याधर चित्रकेतु के इतिहास का पाठ करते है वो परमगति प्राप्त करते है ।

पृष्ठ ४ से आगे.....

भागवत का तत्व सिद्धांत समझानेवाले श्री नित्यानंद स्वामी

थे इसलिए सयाजीरावने कहा कि "यह नित्यानंद भी वहाँ जा रहे है इन्हें आपतो क्या विश्व के विद्वान भी नही जीत शकते । अगर हार कर आवोगे तो वर्षासन बंध हो जायेगा ।"

भगवदानंद स्वामी आदि संतो के साथ नित्यानदं स्वामीने श्रीहरि का ध्यान कर अहमदाबाद की तरफ प्रयाण किया । एक गाड़ी में स्वामी बैठे थे तथा दूसरे में पुस्तके थी । अन्य लोग आगे पैदल चल रहे थे । अहमदाबाद पधारे तब साक्षात् व्यासजी लग रहे थे । उस समय के आचार्य महाराजश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजने स्वागत करवाया । और उनके शहर में लाये । गोसाईजी की हवेली से ये जब गुजरे तब नित्यानंद स्वामी को देख उनके पसीने छूट गये ।

अहमदाबाद मंदिर में विद्वानो की बडी सभा हुई किन्तु किसी को बोलने की हिंमत नहीं की । याद किए हुए प्रश्न भूल गये । अंत में नित्यानंद स्वामी बोले "स्वामिनारायण सर्वावतारी पूर्ण पुरुषोत्तम सर्वेश्वर है और उनसे स्थापित यह संप्रदाय सर्व शास्त्र एवं वेदो द्वारा प्रमाणित है यह साबित करने हम आये है। हे ! विद्वानो जिन्हे शंका है वे पूछे ।" किसीने प्रश्न पूछे नही । स्वामीने फिर से कहा तब जाकर थोडे प्रश्न पूछे गये जिनका समाधान नित्यानंद स्वामीने तुरंत कर दिया और स्वामिनारायण भगवान का अवतार तथा सर्वावतार साबित किया ।

सत्संग सुरभि :

ऐसा गलुजी से हो सकता है, दूसरे से नही

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (अहमदाबाद)

मेहमदाबाद के बगल के छोटे से गाँव में गजूली नाम के राजपूत रहते थे। महाराज सर्व प्रथम अहमदाबाद में पधारे उस समय गलुजी दर्शन करने आये। शोभायात्रा में महाराज हाथी पर विराजमान थे। सभी को प्रेममयी दृष्टि से देख रहे थे, इस स्वरुपको देखकर गलूजी महाराज के प्रेम में वशी भूत हो गये। उसी समय महाराज से कंठी पहनकर नीति-नियम को धारण करके सत्संगी हो गये।

एक बार महाराज गलुजी के गाँव में पधारने वाले थे। उस समय गाँव के बाहर महाराज का धूमधाम से स्वागत होने वाला था। गलुजी ढोलमजीरा बजाने की सेवा का भार लिये।

संयोग वश गलुजी की माता उसी समय पंचत्व को प्राप्त हो गयीं। अब गलुजी क्या करे ? महाराज गाँव में अधिक रुकनेवाले नहीं थे। मां का अग्नि संस्कार करने जायें तो महाराज के उत्सव में भाग नहीं ले पायेगे। महाराज का दर्शन भी नहीं हो पायेगा। ऐसा आनंद फिर कब मिलेगा।

गलुजी एवं उनके भाइयों ने तुरंत निश्चित किया कि महाराज का स्वागत पहले, माता का संस्कार बाद में। गलुजी तथा उनके भाइ कहीं पढने नहीं गये थे। लेकिन सत्संग के प्रभाव से उनके भीतर विवेक जग उठा। क्षणभंगुर शरीर की महत्ता जानकर एवं नित्य परमात्मा का प्रेम जानकर दोनो का भेद समझकर तुरंत ही निर्णय कर लिये और माता की पांचभौतिक शरीर को वस्त्रादि द्वारा ढंक कर वाद्य यंत्रो से सुसज्ज होकर उत्सव में निकल पडे, किसी को खबर भी नहीं पडी।

अपने भाइयों के साथ गाजे बाजे से सुसज्ज महाराज के स्वागत केलिये चल दिये। महाराज की मूर्ति देखते जाते आनंद में आकर "मारे आज प्रीतम घेर आविया" का कीर्तन गाते - नाचते - ढोलबजाते जा रहे थे। खूब उत्तम यह यात्रा थी। अनंत कोटी ब्रहमाडं के अधिपति शोभायात्रा में अपलक दृष्टि से गलजी एवं गलुजी के भाइयों की इस प्रकार की भावना देखकर आनंदित हो रहे थे।

महाराज को गाजे बागे के साथ गाँव के शेठ के यहाँ ले जाया गया। वहीं पर महाराज एवं संत मंडली भोजन की बाद में महाराज वडताल के लिए निकल गये।

बाद में महाराज को बाजे गाजे के साथ गलूजी गाँव के बाहर छोडने गये। वहाँ से संत एवं महाराज सभी विदाई लेने वाले थे। महाराज माणकी घोडी सेनीचे उतरे और गलुजी को पास बुलाये। गलुजी ? अब आप घर जाइये, वहाँ अपनी मां का अवशेष कार्य कीजिये। सुबह से भूखे-प्यासे है।

गलुजी सजलनेत्र से महाराज को प्राणाम किये। महाराज गलुजी के माथे पर हाथ रखे और गलुजी को परम शांति मिलने लगी। बाद में माहराज माणकी घोडी पर सवार होकर वडताल के लिये निकल गये। महाराज जब तक आखों से ओझल नहीं हुए तब तक गलुजी महाराज को अपलक दृष्टि से देखते रेह। आखों से ओझल होने के बाद भाइयों के साथ घर वापस आये।

रास्ते में मुक्तानंद स्वामी ने पूछा महाराज ? गलुजी की मां का क्या काम अवशेष है ? क्यों भूखे प्यासे हैं ?

महाराजने कहा, हाँ स्वामी ! माता की मृत शरीर घर में पडी हो, तो किस प्रकार खाना-पिना होगा ? बडी आश्चर्य मे पडकर स्वामीने कहा, माँ की मृतदेह ? यह क्या ?

महाराजने कहा, आज सुबह में ही इनकी माँ ने शरीर छोड दिया। गलुजीने अपनी माँ की शरीर को ढंककर भाइयों के साथ मेरा स्वागत-पूजन करने आये।

महाराज की बात सुनकर स्वामी एवं अन्य सभी आश्चर्य में पड गये। गलुजी की महाराज के प्रति इतनी निष्ठा ? यह तो निष्ठा की पराकाष्ठा ही कही जायेगी। महाराज के साथ चलने वाले संत भक्त सभी एक ही आवाज में बोले।

महाराजने कहा "यह तो गलुजी से ही सम्भव है, अन्य से नही।" महाराजने गलुजी को कितना सुन्दर प्रमाण पत्र दिया। यह निष्ठा के कारण ही मिला।

महाराजने कहा "यह गलुजी की तरह निष्ठा कब आती है, जैसे कोई छोटा बालक जब डर जाता है तब अपनी माता की गोद में जाकर सिमट जाता हौ। ठीक ऐसी स्थिति निष्ठा की है, जो गलुजी में थी ऐसी निष्ठा अन्य में हो तो वह भी इसी कोटि में आयेगा।

सत्संग बालपाठिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

पक्की निष्ठावाले का काम हो

- शा. हरिप्रियदास (गांधीनगर)

चरोतर प्रांत में सुंदर डभाण नाम का गाँवल है। वहाँ का यह उदाहरण है। पहले डभाण आता है बादमें नडियाद आता है। पुराने जमाने में डभाण का नाम कर्णावती था। संस्कृत में भी दर्भावती ही कहते हैं। वही पर भगवान स्वामिनारायण ने यज्ञ किया। उस यज्ञ में खूब जनमेदिनी एकत्रित हुई। चारोतरफ भीड.... भीड.... भीड....।

स्वामिनारायण भगवान का निवास किसी हरिभक्त के घर निश्चित किया गया। लेकिन भगवान स्वामिनारायण उस भक्त के घर निवास करने के लिये ना कर दिये, इसलिये कि हजारो की संख्या में भक्त आये है, हम मैदान में सोयेंगे जिससे भक्तों को दर्शन का लाभ मिले और भक्तजन प्रसन्न हों।

स्वामिनारायण भगवान की यह खूबी थी। जब अहमदाबाद में नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा किये तब प्रभु स्वयं कांकरिया के खुले मैदान में ही रहे थे। किसी के मकान में नही रहे। यहाँ भी ऐसा ही किये। विशाल खुले मैदान के बीच में महाप्रभु श्रीहरि सो गये। यज्ञ का काम धूमधाम से चल रहा था। श्रीहरि के सेवा में चार पार्षद खडे थे।

एकवार गडवड हो गयी, पद्यपि पार्षदो में कोई कमी नहीं थी। सेवा की पराकाष्ठा कि वे महाराज के सोने पर स्वयं खडे - खडे ही सो लेते थे। इतमें एकपार्षद युवान उसके मन में हुआ कि श्रीहरि के बगल में जगह हे वही जाकर सो जांय। अब उसे पागल कहा जाय या सचेत जिसके मन में ऐसा विचार आये। भगवान की प्रकृति भी कैसी -

"लगार चडी जाय त्यारे फुडकी रे,
जागे सुंदर श्याम, कोण छे पछे रे,
सेवक ने सुखधाम....."

इसलिए श्रीजी महाराज तुरंत ही पूछे, अरे भाई तुम कौन हो ? इतने में अन्य पार्षद भी चैतन्य हो गये, और कहने लगे प्रभु हम खडे हैं, प्रभुथोडा गरम होकर कहने लगे कि तुम सभी की कैसी व्यवस्था है, वे सभी ठन्ढे पड़ गये - मस्तक नीचे कर लिये। मंच के ऊपर कैसे आये, अब उसकी जांच चालू हो गयी। प्रभु उसके गलेमें कंठी देखकर पूछे कि तुम्हारे गले में कंठी कौन बांधी ? मुक्तानंद स्वामीने बांधी। महाराज को बडा आश्चर्य हुआ, तुरंत ही मुक्तानंद स्वामी को बुलाया गया, मुक्तानंद स्वामी आये, उन्होने कहा हाँ हमने कंठी बांधी है लेकिन थोडा दिमांग का कमजोर है, फिर भी महाराज ने उसे जाने को इसलिए कह दिया कि उसमें गुरु के प्रति निष्ठा थी, मंदबुद्धि होते हुए भी युवान का काम हो गया।

मित्रो ! हम में समझ कम हो, हम कम पढे हों परंतु भगवान में एवं संत में श्रद्धा हो तो वह पार हो जाता है। अपना पता सही हो तो पत्र सही जगह पहुँचने वाला ही है। संत जिसका साक्षी हो तो भगवान उसे अवश्य अपना लेंगे। इसलिए नरनारायणदेव एवं नरनारायणदेव पीठाधिपति में ऐसी निष्ठा ऐसी श्रद्धा होनी चाहिए। नींद में भी हम कह शके कि हम नरनारायण के हैं। आचार्य महाराजश्री का हूँ। तभी स्वामिनारायण भगवान के बगल में स्थान मिलेगा।

•

कितने जीये यह महत्व का नही

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

एक जंगल में पहाण की तलहटी में ऋषियों का आश्रम था। वहाँ बहुतायत में विद्यार्थी विद्याभ्यास के लिए आते थे। जिस में अश्वविद्या, ब्रह्मविद्या, शास्त्र विद्या, योग विद्या, संगीत विद्या, नाट्यविद्या, नीतिविद्या, इत्यादि की शिक्षा दी जाती थी। अभ्यास करने के लिए राजकुमार, ब्राह्मण बटु, गंधर्व, चारण, इत्यादि आते थे। वहाँ के एक ऋषि पुत्र ने कहा पिताजी ! मुझे तप करने जाना है। मुझे अभ्यास नहीं करना है। ऋषि ने कहा क्यों ? पुत्रने कहा - मुझे अजर-अमर होना है। ऋषिने समझाते हुए कहा कि अजर-अमर होने के लिये तप करने की जरुरत नहीं। इसके लिए तूं सत्कर्म कर। सत्शास्त्रो का अभ्यास कर, भजन भक्ति का ध्यान - उपासना कर। भगवान ने जितनी उम्र दी है उसमें भगवान की आराधना करके सदुपयोग कर। तूं निश्चित अमर बनेगा। तूं मरेगानही, तेरा संसार में नाम होगा। जगत में सभी तुझे नारद,सनकादिक, ध्रुव, तथा प्रहलाद की तरह याद करेंगे। लेकिन यह उपदेश ऋषिपुत्र के गले नहीं उतरा। उसने हठ किया कि हमें तप ही करना हैं। तूं पिताकी आज्ञा के विरुद्ध तप करेगा तो भगवान प्रसन्न नहीं होंगे। तो कोई बात नहीं हम ब्रह्मा का तप करेंगे। ऐसा कहकर ऋषि पुत्र जंगल में जाकर तप करने लगा। उद्धव व्यक्ति अच्छी सिद्धि प्राप्त करके भी उत्तम कार्य नही कर शकता है। अति कठोर तपस्या करके ब्रह्माजी को प्रसन्न किया। ब्रह्माजी ने वरदान मांगने को कहा। जो चाहिये वह मांगले, मैं दूंगा। यह सुनकर ऋषिपुत्र ने कहा कि हमें अमर बनना है। मुझे मरना नहीं है। ब्रह्माजीने कहा तूं अपने पिता की आज्ञा में रह अमर बन जायेगा। ऋषिपुत्रने कहा नहीं-नहीं ऐसा नहीं। हमें तो न मरने का ही वरदान चाहिए। तूं दूसरा कोई वरदान मांग। नहीं मुझे यही वरदान चाहिये। ब्रह्माजीने कहा कोई निमित्त बता तो उसके अनुसार उम्र को बढा दूं। ऋषि पुत्र ने कहा - "निमित्त तो यह सामने पर्वत है। यदि इस पर्वत का

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १८

।। भक्तिसुधा ।।

मामी देर करें तो ही लाना

- तरलाबहन अतुलभाई पोथीवाला
(अहमदाबाद)

घनश्याम प्रभु की एक मामी थीं । उनका नाम लक्ष्मीबाई था । एक दिन प्रातः मामीने भक्तिमाता को पूछा, "आज क्या भोजन बनाऊ ?" भक्तिमाता कहने लगी, "रसोई की कोई जल्दी नहीं है । शांति से हलुआ बनाइएगा ।"

लक्ष्मीबाई तो अंदर रसोई में जाकर धीरे से भोजन बनाने लगी ।

रसोई तैयार होने में काफी समय लग गया । इस कारण भक्तिमाता को बहुत भूख लगी थी । परंतु स्वयं ही कहीं थी की शांति से भोजन बनाना ।

इस तरफ पालने में सोते-सोते बाल प्रभु को ज्ञात हो गया कि माता को भूख लगी है और भोजन तैयार ही नहीं है । इसलिये भगवानने आठ सिद्धियों को भोजन लाने के काम में लगा दिया । क्षणभर में ही भोजन लेकर वह आगें सिद्धि भोजन लेकर आ गयी । प्रत्येक सिद्धि स्मवान थीऐसे जैसे स्वर्ग लोक की अप्सरा हो । उन्होंने सुंदर रंगबिरंगी श्वेत सुंदर वस्त्र पहने थीं । और प्रत्येक के हाथ में सुंदर स्वादिष्ट बत्तीस भोजन के पक्वान्न थे ।

एक साथ, सभी स्वस्मवान स्त्रियों को घर में देखकर भक्तिमाता तो आश्चर्य चकित हो गयी । स्त्रियों ने कहा, "माताजी हम सिद्धियाँ हैं । आप को भूख लगी थी इस लिए थाली में अनेक भोग-पक्वान्न आपके लिये लाये हैं उन्हें आप ग्रहण कीजिए ।"

सिद्धियों ने कहा फिर भी भक्तिमाता को संकोच हुआ । इसलिए घनश्याम प्रभुने पालने में से उतरकर थोडा भोजन ग्रहण किया । माता को भी भोजन करने को कहा ।"

अष्ट सिद्धियों के सुमधुर भोजन को भक्तिमाताने ग्रहण किया ।

भक्तिमाता जब भोजन कर रही थीतो रसोई में से मामी गरमागरम हलुआ लेकर बाहर आकर देखा तो आठ सिद्धियाँ और साथ में स्वादिष्ट पकवान भोजन । सिद्धियों का सौंदर्य औप मीठे पकवान के स्वादिष्ट सुगंध से लक्ष्मीमामी तो आश्चर्य चकित हो गयी ! उनका भोजन तो हाथ में ही रह गया ।

सिद्धियाँ बोली, हे भक्तिमाता, हम रोज अब भोजन लायेंगे । भगवानने कहा, "रोज नहि, मामी को जब रसोई बनाने में देर हो तब भोजन लाइएगा ।"

बाल प्रभुने प्रेम से मामी को कहा, "आइये, मामीजी ! आप भी भोजन कर लीजिए ।"

अष्ट सिद्धियाँ महाप्रभु की इस बाललीला का दर्शन करके धन्य हो गई । "आज हमारा भोजन महाप्रभु और उनकी माताजी तथा मामीने ग्रहण किया था । इसीलिये वे अति कृतार्थ हो गयी ।

अंत में सभी सिद्धियोंने बाल प्रभु के तथा भक्तिमाता के चरण स्पर्श किये और आकाश में अदृश्य हो गयी ।

टूटते तारों की भांति आठ आठ तेज की लकीरे देखकर भक्तिमाता और लक्ष्मीमामी आश्चर्य चकित हो गयी ।

•

ऊझाँ गाँव में श्रीहरि की हुई अद्‌भुत लीलायें

- पटेल रेखाबहन कीर्तिकुमार (ऊझाँ)

महेसाणा जिला के नजदीक में आये हुए ऊँझा गाँव में श्री स्वामिनारायण भगवानके लीला-चरित्रों का वर्णन ।

ऊझाँ में स्वामिनारायण मंदिर (हरि मंदिर) है । मंदिर दक्षिणद्वार का है । इस मंदिर का निर्माण संवत १९२५ की साल में शास्त्री स्वामी चैतन्यदासजीने किया था । उस समय स्वामीने पटेल रतनचंद बारैया को बुलवाकर उनका सहकार लेकर इस मंदिर का निर्माण किया था । तथा चैतन्यदासजी स्वामी उनको आशीर्वाद दिये थे कि उनके पुत्र सत्संगी होंगे और आज की तारीख में उनके परिवार में अच्छा सत्संग है । उसके बाद इस मंदिर को पुनः सुंदर ढंग से कृष्णवल्लभदासजीने कोठारी भक्तिभाई तथा कोठारी विठ्ठलभाई के साथ और सहकार से बनवाया था । तथा उसकी प्राण प्रतिष्ठा सं. १९९७ को जेठ वद-४ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री देवेन्द्रप्रसादजी के वरद् हाथों से हुई थी ।

ऊँझा गाँव में श्रीहरि कई बार पधारे थे । और उन्होंने अनेक लीलायें भी की थी । और ऊँझा गाँव की भूमि को पावन किया था । गाँव की पूर्व दिशा में एक पीपल का वृक्ष है । वहाँ भगवान झूले पर झूले थे । गाँव के इशान कोने में एक तालाब है । वहाँ महाराजने अपने बाँये चरण से तालाब के पानी का स्पर्श करके तालाब में उत्पन्न लील का नाश किया था । तथा पानी को शुद्ध किया था ।

उदेकुंवर करके एक ब्राह्मण वाई थी । उन्हे भगवान की भक्ति में बहुत रस था परंतु घर के काम में वे इतनी व्यस्त रहती थी कि उन्हे भक्ति करने का समय ही नहीं पिलता था । तब भगवान ने उनको एक दिन दर्शन देकर कहा की उन्हे फलहार करके रहना है । उस दिन से उदेकुंवरबाई रोज एक शिंहांणा खाकर रह जाती । और भगवान उन्हे नित्य दर्शन देते । जीवनपर्यंत ऐसा ही होता रहा ।

ऊँझा तालाब की लीली का नाश श्रीहरिने किया :-

एक समय श्रीजी महाराज ऊँझा गाँव के एक पीपल के वृक्ष के नीचे खड़े थे । वहाँ कई काठी असवार भी थे । महाराजने असवारो को कहा कि वहाँ बडा पानी का तालाब है उसमें पानी पिला दो । सभी घोडेसवार घोडो को वहाँ लेकर पानी पिलाने गये । और तालाब में देखा तो

पानी पर एक-एक बित्ते जितनी काई जमी हुई थी । और पानी तो दिखाई भी नहीं दे रहा था । घोडे सवारोने महाराज को बताया कि तालाब में पानी तो बहुत है परंतु पानी के ऊपर काफी काई जमी है । उस समय गाँव के कई लोग भी वहाँ थे । वे बोले की तालाब को कोई शाप है । इस कारण कभी काई निकलती ही नहीं । वास्तव में तो यह तालाब बहुत बडा है । और बारह मास यहाँ तालाब का पानी भी नहीं सूखता है तथा जानवर भी यह पानी नही पीते हैं । उसी समय महाराज माणकी घोडी पर सवार होकर तालाब के पास आ गये । साथ ही गाँव के आदमी भी तालाब के पास आ गये । महाराज माणकी घोडी को लेकर तालाब के अंदर गये । भगवान के चरणों के स्पर्श मात्र से ही ली लअपने आप ही कट कर दूर हो गयी । और आज इतने वर्षो के बाद भी कहीं तालाब में काई नही है । ऐसे अद्‌भुत चत्मकार भगवान ने ऊँझा गाँव में किये है । गाँव के लोगों ने इस चमत्कार को देखकर मान लिया की साक्षात् स्वामिनारायण प्रगट पुस्योत्तम भगवान ही है । इस प्रकार भगवान की इन भिन्न-लीलाओं के कारण ऊँझा गाँव की भूमि पवित्र-पावन है ।

छपैया में भगवान के प्राकट्य समय पर मार्कन्डेय ऋषि आये थे उसी समय उन्होंने भगवान का कर्णवेध संस्कार किया था । तब भगवान ने कहा था कि आप का और हमारा मिलना एक बार भविष्य में जरुर होगा । जब भगवानने ऊँझा गाँव में १८ संतो को दीक्षा दी थी उन्ही संतो में से एक संत महानुभावानंद स्वामी थे वही ये मार्कन्ड्य मुनि थे ।

●

मानबाई

- कंचनबहन बाबुभाई पटेल (रतनपुर, मूलीदेश)

विहार गाँव में मानबाई नामक एक ब्राह्मण बाई रहती थी । श्रीहरि के प्रति विशेष निष्ठा रखकर अखंड भक्ति करतीथी । श्रीहरि की प्रसन्नता से उन्हें निरावरण दृष्टि प्राप्त हुई थी । तथा वचन सिद्धि की प्राप्ति भी हुई थी । स्वयं स्वतंत्रापूर्वक समाधि करके धाम में जाकर वापस भी आ जाती थी ।

एक समय अपने भतीजे के मृत देह को उन्होंने स्वयं ही अक्षरधाम की गति प्राप्त करवाई थी । एकबार घर की गाय-भेंसो की कमी के कारण अपने बडे कुटुंब में छाछ की क्षति होने लगी । इसीलिए मानबाई ने कहा कि छोटी भेंस को दो शेर बाजरा खिलाकर दूध दोहना पाँच बार दिन में दूध देगी । इस प्रकार मानबाई का वचन पालने से दूध-छाछ का क्षति दूर हो गयी ।

स्वयं कईबार गढ़डा जाती और वहाँ स्कती थी । भोजन बनाकर महाराज को खिलाती थी । उनकी सेवा से महाराज बुहत प्रसन्न होते थे । मानबाई के कुटुंब मं पीतांबर त्रवाडी थे । वे एकबार वासुदेवानंद वर्णी के पास ऊना गये । वहाँ से स्वामी की अनुमति पाकर अहमदाबाद आकर भक्ति की । उसी प्रकार कपिलेश्वरानंदजी को भी मानबाई ने ही उपदेस देकर संसार का त्याग करवाया था ।

उन्होंने कईलोगों को त्याग के मार्ग का उपदेश दिया था । तथा कई गृहस्थ बाइयों को उपदेश देकर सत्संगी बनाया था । श्रीहरि की ईच्छा से उन्होंने एकसो दश वर्ष के आयुष्य का भोग किया था । ऐसी थी मानबाई ।

●

सत्य भक्ति

- गीताबहन लीलाधरभाई पित्रोडां (जोरावनगर-मूलीदेश)

एक संत थे । उन्हे बडे संत-साधु होने की तीव्र इच्छा थी । छोटे संत में से बडे संत हुए और बडे संत होने का तो उन्हे बहुत ही आनंद और गौरव था । बाद में उन्हें लगा की मैं इतना बडा संत हूँ तो कोई चमत्कार बताकर किसी का गुरु बन जाऊँ ।

यह संत घूमते-घूमते एक गाँव में आ गये और रास्ते में मोची की दुकान आयी । वह आदमी साधारण स्थिति का था । इसीलिए संत को मोची पर दया आ गयी और कहा भाई, तुम्हारी गरीबी दूर हो ऐसा एक उपाय बताता हूँ । तुम्हारे जो लोहे के औजार है मैं उन्हें सोने का बना देता हूँ । ऐसा कहकर उन्होंने मोची के औजारो पर जडी-बुटी का स्पर्श करवाया और औजार सोने के बन गयें । मोची तो प्रसन्न हो गया और संत वहाँ से चले गये ।

अब, मोची के मन में हुआ कि मैंने तो श्रीहरि को वचन दिया है कि सत्य बोलना और अपने हक्क के अलावा और कुछ अधिक नहीं लेना । इस प्रकार विचारकर उसने अपने सोने के हथियार फेंक दिये । तथा नये दूसरे लोहे के हथियार लेकर अपना कार्य पुनः शुरु किया । थोडे समय बाद वह संत पुनः उस मोची के पास आकर कहा कि "भाई तुम्हारी ऐसी परिस्थिति अभीभी है ? तो मोची ने उत्तर दिया कि महात्माजी मेरे कार्य में तो मात्र लोहे के ही हथियार उपयोगी होते है । इसलिए मैंने सोने के औजार फेंक दिये । तो संत बोले कि भाई ! तुम इन सोने के औजारों को बेचकर लखपति भी बन शकते थे । तब मोचीने कहा कि, "नही, संतजी ऐसे जोमेरे हक्क का नहीं है वैसा सोना मुझे नहीं चाहिए । तथा सत्य का पालन निरंतर करने के कारण भगवानने उसे ऐसी शक्ति प्रदान की थी की मोचीने वहाँ पडे पथ्थर का भी स्पर्श किया तो वह सुवर्ण बन गया ।

संतजी तो विचार में पड गये और उसकी सिद्धि का रहस्य जानने की इच्छा हुई । तब संत को उस मोचीने कहा कि, "महात्मन् ! सत्य, निष्ठा ही चमक्कार का रहस्य है । मैंने मेरे जीवनमें नित्य कार्यो में भक्ति और सतत्य का पालन करता हूँ । तथा सत्य बोलना यही मेरा धर्म है । इस प्रकार मोची की सच्ची निष्ठा और भक्ति देखकर संतने अपना मिथ्या

अभिमान छोडकर मोची को प्रणाम किया । इस प्रकार मोची की जाति में जन्म लेने के बावजूद भी सत्य आचरण से नीतिनिमय युक्त जीवन जीने से प्रभु पारायण बन गया । इसलिये हमें सत्य का पालन करना चाहिए तथा अपने हक्क का ही लेने पर भगवान प्रसन्न होतें है ।

•

केशाबा का संशय दूर हुआ

- राधाबहन रसिकभाई गोळविया (सुरत)

देवकीया के जालमसिंह की माँ केशाबा जो सत्संग की बहुत ही श्रेष्ठ हरिभक्ता थी । महाराज को एकबार केशाबा ने आग्रह पूर्वक रोक लिया । महाराज को जाने नहीं दिया ऐसी उनकी भक्ति का प्रेम था । एकबार श्रीहरि के दर्शन करने हेतु गढपुर आयी थी । तब श्रीजी महाराज दादा के कमरे की ओशरी में अपने पलंग पर बिराजमान थे । उनके सामने बडी सभा बैठी थी । दूसरी तरफ स्त्री हरिभक्ता भी सभा भरकर बैठी थी ।

उस समय महाराज के पास हरी सब्जी का कुटोरा पास में ही रखा था । महाराज उस हरीसब्जी को कच्ची ही खा रहे थे । इस प्रकार भगवान को लीला-चरित्र को केशबा ने देखा । इस कारण केशरबा चरण स्पर्स करके स्त्रियों की सभा में बैठकर सोचने लगी इस तरह के भगवान नहीं हो सकते । ये मनुष्य ही है । जिसे हरी सब्जी भी खानें नही आती तोड तोडकर इस प्रकार तो कोई पशु भी नहीं खाते उस प्रकार ये हरी सब्जी खा रहे हैं । अगर कोई समझदार पुस्त्र हो तो वह सब्जी को सुधार कर खायेगा । यहाँ तो मेरा समय व्यर्थ हो रहा है । इस प्रकार सोचकर उतारे पर जाकर बैल गाडी मँगवाकर चली गयी ।

महाराजने स्त्रियों की सभा में कहवाया कि केशूबा क्यों चली गयी उसकी जाँच करवाइए । वे लोग केशाबा के पास आये । तब महाराज खडे होकर जो तकिया उनके सामने पडी थी उसे उछालकर फेंका और तकिया घूमते-घूमते पलंग पर जिस तरह से तकीया रखते हैं उसी प्रकार आकर गिर गयी । इस प्रकार की लीला देखकर केशाबा को विश्वास हो गया की यही पूर्ण पुस्त्रोत्तम भगवान है । इस प्रकार उनका संशय दूर हो गया । इस प्रकार वे स्त्रियों की सभा में जाकर बैठ गयी और महाराज के दर्शन एकचित से ध्यानमग्न होकर करने लगी ।

दर्शन करते हुए महाराज की मूर्ति सोलह वर्ष की अति प्रकाशवान, चमकदार वस्त्र-आभूषण के साथ अति सोभित महा दिव्य तेजोमय दिखाई दे रही थी । इस कारण केशाबा को अडिग निश्चय हुआ की महाराज ही भगवान है तथा सभी संशय दूर हो गया ।

पृष्ठ १५ से आगे.....

सत्संग बालवाटिका

नाश हो तो मेरी मृत्यु हो जाये । ब्रह्मा थोडा विचार करने लगे कि इतने बडे पर्वतका नाश कैसे होगा । कम से कम एक हजार वर्ष तो होगा । फिर भी ब्रह्माजीने हाँ कह दिया । इसलिये कि पिता महान ऋषि एवं ज्ञानी थे, इसके गलत आचरण को बर्दास्त नहीं करेंगे । समाधान करते रहेंगे । बालक प्रसन्न होकर पिता के पास गया । कहा मैं अमर हो गया हूँ । पिताने कहा तो अब सत्कर्म कर, साधु महात्मा की सेवा कर, सादगी से जीवन जीना प्रारम्भ कर दे अखंड भजन भक्ति कर, चांद्रायण आदिक व्रत कर, गाँव-गाँव घूमकर सत्संग कर, भागवत-गीता, व्यास सूत्र, वेद वेदांतो के अर्थ को समझाव, सभी के जीवन में प्रभु भक्ति उत्पन्न हो ऐसा कर ।

अरे पिताजी ऐसा आप क्यों कह रहे हैं । अब आप भी यह सब छोड दिजिये । अब हम तो बडे-बडे राजाओं के साथ युद्ध करेंगे । अब हमें कीसी से कोई भय नहीं है । यह सुनकर पिता को बडा दु:ख हुआ । क्योंकि इसके संस्कार का अक्षर यहाँ पढने वाले राजकुमारों पर पडेगा । जो हम यह श्रद्धा-विश्वास रखते हैं । उन्हीं के साथ तूं यूद्ध करेगा ? हाँ क्योंकि हमें राजा होना है । पिता ने श्राप देते हुए कहा जा तू राजा को जीत नहीं शकेगा । हम राजाओं के ऊपर विजय पाने के लिये यज्ञ करेंगे । वह ऋषिपुत्र राजाओं के सामने युद्ध करने गया लेकिन उसे हार मिली । राजाओं की जीत में ऋषिमुनियों एवं यज्ञनारायण का आशीर्वाद था । ऋषिपुत्र के क्रोध की कोई सीमा ही न रही । अब वह साधुओं के साथ द्रोह आरम्भ कर दिया । यज्ञ में विघ्न करने लगा । यह द्रोह आयुष्य के नाश का कारण बना । सभी ऋषि सभा किये और निश्चित किये कि इस ऋषि पुत्र का नाश करना हो तो हमें भी कोई उपाय करना होगा । जिस प्रकार हिरण्यकशिपु का नाश करने के लिए भगवान ने नरसिंह अवतार लिया था । इसी तरह इसके नाश के लिए भगवान से याचना करनी पडेगी । उसी में से एक महात्मा ने कहा भगवान को बुलाने की कोई जरूरत नहीं है । इसके लिए तो मूषक ही पर्याप्त हैं । ऋषियों ने सैंकडो मूषक पैदा किया और योगबल से आज्ञा किये कि इस पहाड का नाश कर डालो । एक ही रात्रि में मूषक पहाड का नाश कर डाले । जिस की उम्र हाजर वर्ष की थी वह एक ही रात्रि में मृत्यु को पाया । मित्रों ! तुलसीदास अपने साखी में कहते है कि :-

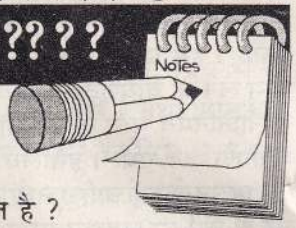
संत संतापे जात है राज कुल और वंश ।
तुलसी तीनो ना रहया रावण, कौरव, कंस ॥

स्वामिनारायण भगवानने भी वचनामृत में कहा का है कि - जिस पर भगवान की या भगवान के संत की प्रसन्नता हो वह चाहे पांचो प्रकार के महापाप किया तो भी उसके खराब कर्म का नाश हो जाता है । वह सुखिया हो जाता है । जिसके भाग्य में स्वर्ग का सुख लिखा हो वह यदि भगवान का भगवान के संत का द्रोह करता है तो उसके अच्छे कर्मफल का नाश हो जाता है एवं नरक में जाता है ।

इसलिए जितने दिन आप जीवित रहे वह महत्व का नहीं है बल्कि किस तरह जीवित रहे वह महत्व का है ।

•

?????????????? प्रश्न पेटी ??????????????



साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी

(श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ कौन सी बात छुपाकर रखनी चाहिए ? ये शिक्षापत्री के किस श्लोक में दर्शित है ? और किसके द्वारा ?

प्रश्न : २ ''भगवान के प्रति स्नेह हो उसका क्या स्म है ?'' वचनामृत में यह प्रश्न किसने पूछा है ?'' उसका सही उत्तर किसने दिया ?

प्रश्न : ३ श्रीजी महाराज शेखपाट पधारे तब लालजी भक्त को कहा मुझे कच्छ जाना है । इस बार तो रण के मार्ग पर चलकर ही जाना है । उसके बाद श्रीजी महाराजने लालजी भक्त के प्रति क्या इच्छा व्यक्त की ?

प्रश्न : ४ सुंदर सुथार राजा बैलगाड़ी लेकर आ रहे थे तब श्रीजी महाराज परीक्षा करके किस गाँव में साधु बनाया ?

प्रश्न : ५ एक समय गढपुर से श्रीहरि का पर्वतभाई पर पत्र आने पर गढपुर गये । गाँव के बाहर निकले वही कई आदमी बुलाने आये और कहा चलिये आपके पुत्र का निधन हो गया है । पर्वतभाईने क्या प्रत्युत्तर दिया ?

प्रश्न : ६ देशकालादिक का नाम बताइये ?

प्रश्न : ७ ''प्यारा मुझने लागी तारी मोहनी, रसिया रे, तारुं जोईने स्म मुजने''
इस सुंदर कीर्तन के रचयिता कौन है ?

जुन २००७ महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर तथा उत्तर देने वालों के नाम ।

(१) अभिजीत नक्षत्र । (२) मखोडा के लिये । (३) संपूर्ण भगवान का महिमा नहीं है तथा स्वभाप पर बात करनेवाले साधु का अवगुण लेने के कारण । (४) ''हे ! महाराज ! हमारे गाँव में कभी यमदूतों का प्रवेश ही न हो ऐसा वरदान दीजिये ।'' (५) भगवान का बल न रखें परंतु साधन का बल रखे उसका त्याग करना चारिए । (६) परा भक्ति का अर्थ ''प्रभु में गाढ प्रीति'' तथा ''अपराभक्ति का अर्थ श्रवण-कीर्तन करना'' होता है । (७) स.गु. निष्कुलानंद स्वामी ।

१. श्री स्वामिनरायण मंदिर हर्षद-बापुनगर
२. खीचडीया रीन्कु नारणभाई - बापुनगर
३. काछडीया राधिका - बापुनगर
४. बावलभाई डी. पटेल तथा पियुष एच. पटेल किशोरभाई वेकरीया - विराटनगर ।
५. सां.यो. उषाबा तथा सां.यो. शीतलबा (स्वामि. मंदिर सुरेन्द्रनगर)
६. पटेल गंगाबहन भक्तिभाई - झुलासन
७. पटेल भक्तिभाई भोलाभाई - राणीप
८. माधवजीभाई आद्रेजा - मोरबी
९. विणाबहन तथा अरविंदाबहन भावसार (नवरंगपुरा - चांदलोडीया)
१०. लालजी आर. ठक्कर - विराटनगर

नोंट : १. प्रश्नपेटी का उत्तर प्रत्येक महीने की २२ तारीख तक आना अनिवार्य है । इसके बाद के आए हुए उत्तर का नाम लिखा नहीं जायेगा । जिसको सभी लोग जानलें ।

२. ''भक्तिसुधा'' श्री स्वामिनारायण मासिक में समाविष्ट हुई है । जिस कारण भक्तिसुधा लेख लिखने वाली बहने श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय, श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद के पते पर लेख लिखकर भेंजे ।

अधिक मास उत्सव दर्शन

- कोठारी स्वा. सत्यप्रकाशदास (अहमदाबाद)

शास्त्र प्रमाण के अनुसार किसी पक्ष में क्षय तिथि तो किसी पक्ष में वृद्धि तिथी आती है । जिसके परिणाम स्वरूप कुछ दिन बढ जाते हैं । शास्त्रप्रमाणानुसार प्रति तीसरे वर्ष ३० दिन बढ जाता है। जिससे १ महीना बढकर आता है जिसे अधिक मास कहते है । इस महीने का माहात्म्य ऐशा है कि स्वयं भगवान इस महीने के अधिष्ठाता है । इस महीने में जप, तप, व्रत, दान, पूजन, अर्चन इत्यादि करने से अनंत गुनाफल की प्राप्ति होती है । यह शास्त्रोक्त विधि है, ऐसा करने से भगवद् धाम की प्राप्ति होती है । इस लोक में सुख की प्राप्ति होती है ।

भगवान श्रीहरिने अपने बाहों में भरकर जिन महाप्रभु श्री नरनारायणदेव को प्रतिष्ठित किया था । उन्हीं के समक्ष प.पू.ध.धु. आचार्य महाजाश्री की आज्ञा से पू. महंत स्वामीकी प्रेरणा से पवित्र अधिक मास में विविध उत्सव हरिभक्तों के यजमान पद पर धूम धाम से मनाया गया ।

श्री नरनारायणदेव समक्ष प्रतिदिन विविध उत्सवों के दर्शनार्थ भक्तों की भीड एकत्रित होती थी । दूसरी तरफ हवेली में कथा की लहर अलग से बह रही थी ।

श्री नरनारायणदेव के समक्ष नाना प्रकार के श्रृंगार से अलंकृत करके सायंकाल की आरती के समय सभी को दर्शन का लाभ दिया जाता था । जिसका दर्शन करके भक्तजन आनंद विभोर हो जाते थे ।

• प्रतिपदा के प्रथम दिन - ग्बालबाल दर्शन, वृन्दावन के दृश्य को उपस्थित करतेहुए वृक्ष के नीचे भगवान श्रीकृष्ण गायें चराते हुए ।

• द्वितीया के दिन रथायात्रा में अश्वों के चांदी के रथ से अलंकृत करके भगवान को रथ पर विराजमान करके दिखाया गया था, जिसका सभी दर्शन करके आनंदित हुए थे ।

• तृतीया के दिन की अद्‌भुत शोभा अपार सुख "इस सुख की क्या बात करें कहा नहीं जा सकता ।"

श्री नरनारायणदेव के पाटोत्सव के समय मंदिर को विविध श्रृंगारों से अलंकृत किया गया था । प.पू.ध.धु. आचार्य हमाराजश्री, प.पू. बडे आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से श्री राधाकृष्णदेव, श्री नरनारायणदेव, श्रीहरि कृष्ण महाराज, धर्मदेव भक्तिमाता को पू. महाराजश्रीने प्रेमपूर्वक पवित्रजल, दूध दही, घी, शहद, केसरजल, गुलाबजल, इत्यादि से वैदिक मंत्रोच्चार के साथ महाभिषेक एवं मंगल आरती की गयी । भक्तजनों के हृदय में आनंद समा नहीं रहा था । अभिषेक के बाद श्रृंगार राजभोग थाल एवं छप्पन भोग, अन्नकूट अर्पण किया गया था । सम्पूर्ण दिन भक्तों की भीड जमी रही ।

प.पू.अ.सौ. बडी गादीवालाजी के मुख्य यजमानपद पर महाभिषेक हुआ साथ में अन्य भक्त भी लाभ लिये । श्री नरनारायणदेव के अन्नकूट के साथ हवेली में घनश्याम महाराज के समक्ष भी अन्नकूट का भोग लगाया गया था । पूज्य बडी गादीवालाश्री एवं पूज्या छोटी गादीवालाजी दर्शन करके खूब प्रसन्न हुई । सत्संगी बहने भी आनंदित हुई ।

• चतुर्थी के दिन श्री गपणति महाराज का रिद्धि-सिद्धि के साथ पूजन-अर्चन किया गया था । सुंदर सिंहासन पर विराजमान करके लड्डू का भोग लगाया गया था ।

• पंचमी के दिन शिक्षापत्री का विविध पूजन करके वसंतोत्सव का दर्शन कराया गया था ।

• षष्ठी के दिन कुंजगली में भगवान श्री राधाकृष्ण महाप्रभु को विराजमान किया गया था । श्री नरनारायणदेव समक्ष अद्‌भुत वृक्ष-लता से आच्छादित करके कुंजगली की रचनाकी गयी थी ।

• सप्तमी के दिन लोया के शाकोत्सव की झांकी उपस्थित की गयी थी ।

• राधाष्टमी के दिन वृन्दावन में राधाजी को विराजमान करके पूजन किया गया था ।

• रामनवमी के दिन मंगल प्रभात में बाल स्वरूप घनश्याम महाराज को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री षोडशोपचार पूजन के साथ महाभिषेक करके अन्नकूट की आरती उतारे थे । बाद मे भक्तो ने दर्शन का आनंद लिया । श्री नरनारायणदेव के समक्ष सुवर्णपात्र में रखकर जन्मोत्सव मनाया गया । पंजीरी का प्रसाद वितरण किया गया था ।

• दशमी के दिन सुंदर विजययात्रा के झांकी की रचना की गयी थी । हाथी के ऊपर भगवान को विराजमान किया गया था । भगवान के अगल बगल छत्र-चामर धारण किये हुए पार्षद दिखाई दे रहे थे । अद्‌भुत शोभा का दर्शन हो रहा था ।

● पवित्र एकादशी के दिन तो भक्तों का हृदय आनंद से नाच रहा था । उस दिन तुलसी विवाह का पवित्र प्रसंग था। भगवान श्री कृष्ण एवं तुलसी माँ का विवाह प्रसंग अलौकिक था । मंदिर केनजदीक विश्रांति भवन में बैंड पार्टी गाजे-बाजे केसाथ यजमान परिवार भगवान के विवाह प्रसंग में सम्मिलित होकर मंदिर तक आया । बापूनगर का युवक मंडल बैंड पार्टी में सुन्दर सुर पुरा था । हरिभक्त श्री नरनारायणदेव के चौगान में खूब नाचे । बहनो ने भी रास किया । कीर्तन की ध्वनि से सारा वातावरण गूंज उठा था । बाल घनश्याम महाराज के सांनिध्य में कन्यापक्ष के यजमान परिवारने भगवान की बलैया लिया । बाद में भगवान विवाह के लिये प्रस्थान किये । श्री नरनारायणदेव की आरती हुई । पश्चात् प.पूज्य बडे महाराजश्री लग्न मंडप में पधारे । वहाँ भगवान की आरती करके सभा में विराजमान हुए । वर-कन्या पक्ष के यजमानने भी आरती की । कन्या पक्ष के यजमान करशनभाई जेठीदास पटेल धरमपुरवाले इस प्रसंग पर १,००,०००/- एक लाख रुपये म्युझियम के लिए भेंट दिया । पू. महंत स्वामीने तुलसी विवाह का माहात्म्य समझाया । भक्तजनों से पूरा मंदिर का चौगान भरा हुआ था । सभी बडेआनंद में थे । ब्राहमणों द्वारा वैदिक मंत्रगान सतत चल रहा था । इस लग्नविधि से सभी को आनंद की प्राप्ति हुई ।

● द्वादशी के प्रात: काल रंगमहल में विराजमान दर्शनीय घनश्याम महाराज के पाटोत्सव प्रसंग पर बडे महाराजश्रीने पंचामृत एवं केसर के जल से महाभिषेक किया । अभिषेक के बाद अन्नकूट का सभी को दर्शन हुआ । श्री नरनाराणदेव के समक्ष वामन भगवान का पूजन अर्चन किया गया ।

● त्रयोदशी के दिन अहमदाबाद में रहने वाले संतो की पूजा के हरिकृष्ण महाराज को श्री नरनारायणदेव के समक्ष रखकर पूजन-अर्चन-आरती करके भक्तजनों को इसका लाभ दिया गया ।

● चतुर्दशी के दिन नृसिंह भगवान की स्थापना करके पूजन आरती का सभी को लाभ मिला ।

● पूर्णिमा के दिन अपार भक्तों की भीड दर्शन के लिए आती है । श्री नरनारायणदेव को चंदन चर्चित किया गया था । पुष्पहार से अलंकृत किया गया था । श्री नरनारायणदेव के समक्ष आसवपालव एवं पुष्पमाला से झूला को अलंकृत करके श्रीहरि को झुलाया गया । पूज्य बडे महाराजश्रीने आरती उतारी थी । भक्तजन दर्शन करके आनंदित हुए थे ।

● दूसरे पूजन के दिन हनुमान जयंती का उत्सव मनाया गया । जिस में हनुमानजी की पूजा अर्चना की गयी थी ।

● ज्येष्ठ कृष्ण प्रतिपदा केदिन तो आनंद का वातावरण मंदिर में वेद के मंत्र बोले जाने लगे । पूज्य बडे महाराजश्री पीताम्बर पहनकर मंदिर में पधारे उस समय जयनाद की धुनि होने लगी । पू. महाराजश्री एवं ब्रह्मचारीजी श्री नरनारायणदेव का केसर एवं पंचामृत से महाभिषेक करने लगे । पू. महाराजश्रीने आरती किया, बाद में भगवान को भोग लगाया गया ।

● कृष्णपक्ष की द्वितीया से पंचमी तक प्रतिदिन नाना विध अलंकारो से अलंकृत झूले में भगवान को झुलाया गया था ।

● कृष्ण सप्तमी के दिन छपैया धाम की प्रतिकृति बनाई गयी थी । सर्वोपरि तीर्थ भूमि "छपैया" जहाँ अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति प्रगट हुए थे, उस पवित्र तीर्थ भूमि की रचना श्री नरनारायणदेव के समक्ष की गयी थी । छपैया का दिव्य मंदिर, धर्म देव का घर, जहाँ प्रभु प्रगट हुए थे, श्री नरनारायण सरोवर, वनराजी ऐसी प्रागट्य भूमि का सभी को दर्शन कराकर सभी को पावन किया गया था । छपैया की तीर्थ भूमि को वंदन करके बाल स्वरुप घनश्याम महाराज का पूजन अर्चन करके सभी दर्शन का लाभ लिये थे ।

● कृष्णपक्ष की अष्टमी के दिन श्री नरनारायणादेव समक्ष सुवर्ण के पालने में परमात्मा की पधरामणी करवाकर पूजन, आरती करके पंजीरी का प्रसाद अर्पण करके जन्माष्टमी का उत्सव प.पू. बडेमहाराजश्री के वरद् हाथों से धूमधाम से मनाया गया ।

भगवान श्रीहरि ग्यारह वर्ष की कोमलवय में हिमालय की दुर्गम पहाडियों में जाकर कठोर तपश्चर्या करके अनंत जीवात्मा का कल्याण करने के लिये मुमुक्षुओं को अपार सुख प्रदान किया । ऐसा हिमालय का स्वरुप बनाया गया था जिस में नीलकंठ वर्णी के रुप में तप कर रहे हो, उस रुप की आरती एवं पूजन करके सभी को दर्शन का लाभ दिया गया ।

● रात्रि में मंदिर के कोठार के आफिस में सेवा करने वाले स्टाप के मित्रोंने जिस में श्री केतन खरसाणी, अभिखर खरसाणी के देखरेख में हिमालय की रचना की गयी थी । सम्पूर्ण रात्रि पर्यन्त सेवा कार्य किया गया था । हिमालय में तप करते हुए नीलकंठ वर्णी

का सुवह में आरती के समय सभी को दर्शन का लाभ मिला । ब्रह्मचारीने वर्णी को भिन्न-भिन्न जटाजूट से सजाया । जिसका दर्शन करके भक्तों ने बद्रिकाश्रम के दर्शन का लाभ लिया । चार दिन तक पर्वतमाला का दर्शन हुआ। पवित्र एकादशी के दिन सभा मंडप में समूह महापूजन का आयोजन किया गया था । जिसमें पू. महंत स्वामी के निर्देशानुसार शा. भक्तिवल्लदासजी ने महापूजा करवाया । जिसमें करीब १०० हरिभक्तोने भाग लिया । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने अपने हाथों से महापूजा प्रारम्भ करके षोडशोपचार पूजन किया था । प.पू. महाराजश्री महापूजा में ११-३० तक विराजमान थे । सभी यजमान खूब प्रसन्न हुए । उस समय प.पूज्या गादीवालाजी की आज्ञा से हवेली में भी समूह महापूजा का आयोजन किया गया था, जिसकी सम्पूर्ण विधि श्री स्वामिनरायण सं. महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. श्री वाचस्पति मिश्रजी ने करवायी थी । महापूजा में स्वयं पूज्या गादीवाला प्रधान पीठ पर विराजमान थी, अन्य बडी संख्या में बहने भी पूजा का लाभ ली थी ।

चतुर्दशी के दिन भगवान के क्रिकेट मैच का आयोजन किया गया था । विशाल टेबल ऊपर क्रिकेट पीच तैयार की गयी थी । स्टेम्प, बैट-बोल तथा क्रिकेटरों की जगह पर एक टीम संतोके आसन से पधारी । दूसरी तरफ मंदिर में श्री नरनारायणदेव थे । छोटे बैट के साथ छोटा साबाँल अर्थात् सम्पूर्ण क्रिकेट सामग्री का तादृश दर्शन हो रहा था । इसी स्वस्प की बाद में आरती की गयी थी । सभी दर्शन का लाभ लिये ।

अंतिम दिपावली

मंगल प्रभात में मंदिर में बन्दनरा बांधे गये । भगवत् कथा में वचनामृत वांचा गया । प्रात ९-३० बजे से ९-५० तक भगवान का भोग लगा, बाद में संत मंडल एवं ब्रह्मचारी मंडल ने अन्नकूट की सेवा में लग गया । १०-०० बजे पूज्य महाराजश्री सभा मंडप में पधारे । पू. महंत स्वामीने अधिक मास का माहात्म्य समझाया । इस के साथ दीपावली का भी महत्व बताया । श्री नरनारायणदेव का माहात्म्य एवं अन्नकूट का माहात्म्य बताया । पू. बडे महाराजश्रीने आरती उतारी थी ।

प्रथम रंगमहल के घनश्याम महाराज की आरती उतार कर आनंदित किये ।

१०-४५ को श्री नरनारायणदेव, राधाकृष्णदेव धर्म, भक्ति, हरिकृष्ण महाराज एवं बाळ स्वस्प घनश्याम महाराज की अन्नकूट आरती उतारे थे ।

श्रीहरि को छप्पन भोग को ग्रहण करते हुए देखकर भक्तजन खूब आनंदित हुए थे । सतत ३-००घन्टे तक अन्नकूट का दर्शन हुआ था। दूसरे दिन भक्तों को अन्नकूट का प्रसाद वितरण किया गया था । अधिकमास का समापन किया गया था ।

विविध उत्सवों को बडे धूमधाम से मनाया गया था । यजमानो ने श्री नरनारायणदेव की खूब सेवा का लाभ लिया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री एवं प.पू. बडे आचार्य महाराजश्री प.पूज्या गादीवालाजी एवं प.पू. बडी गादीवालाजी पूज्य लालजी महाराजश्री एवं पूज्य श्रीराजा खूब प्रसन्न हुई । पूज्य महंत स्वामी एवं संत-हरिभक्त दर्शन करके खूब प्रसन्न हुए ।

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवानने श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा के समय जिस प्रकार उत्सव किया वैसा ही उत्सव आज भी मनाया जाता है ।

उत्सव के आयोजन में पू. महंत स्वामीने अपने शिष्य मंडल को मन से कार्य करने की आज्ञा दीथी । जिस में समय-समय पर श्री नरनारायणदेव के पुजारी ब्र. राजेश्वरानंदजी तथा उनका मंडल एवं रंगमहल के पुजारी स्वा. परमेश्वरानंदजी तथा बालं स्वस्प घनश्याम महाराज के पुजारी वासुदेवानंदजी का पूर्ण सहयोग था । मंदिर में संत, वर्णी एवं पार्षदो को भोजन एवं वस्त्रादि प्रत्येक उत्सव पर दिया गया था ।

को. सत्यप्रकाशदासजीने सतत इस उत्सव के लिए प्रयत्नशील रहे । श्री नरनारायणदेव के कोठार में सेवा करनेवाले निष्ठावान सेवकोंमें जयेश, विनोद, जशुभा, राणा, अनिल, मनोज, राकेश, राजू, इसके अलावां कर्मचारी मित्र एवं असारवा गुरुकुल के रमेशभाई, मगनभाई चंपकभाई इत्यादि लोग बडी तत्परता के साथ सेवा करके श्री नरनारायणदेव तथा धर्मकुल एवं संतमंडल की प्रसन्नता प्राप्त किये थे । दर्शनार्थी भक्तजन ने दर्शन का दिव्य लाभ लिया था । इसके अलांवा श्री नरनारायणदेव के उत्सव मंडल के श्री भरतभाई चौकसी, नारायणभाई ने वाद्ययंत्रो के साथ कीर्तन गाकर भगवान को प्रसन्न किया था । चंदन की सुगन्ध से एवं सुगन्धित पुष्पो की सुगंध से सारावातावरण सुगंधमय बन गया था । जिसकी याद सभी को हंमेशा रहेगी । वचनामृत-३ के अनुसंधान की स्मृति होती रहेगी ।

सत्संग समाचार

श्री नरनारायणदेव के केसर स्नान का महोत्सव

ग्रीष्मऋतु में ठाकुरजी की सेवा के माहात्म्य पर वैशाख सुद-३ से द्वितीय जेष्ठ सुद-१४ तक ढाई महिने तक प्रतिदिन श्री नरनारायणदिक देवो के तथा बालस्वरूप श्री घनश्याम महाराज को सुंदर चंदन के वस्त्र शिंगार पूजारी ब्रह्मचारी मंडलने बहुत ही श्रद्धा से करके भक्तजनो को दर्शन का सुंदर लाभ प्रदान करवाया था। अधिक मास के मध्य में उत्सव धूमधाम से मनाये गये थे। जिसकी झलक इस लेख में प्रस्तुत है।

चंदन के वस्त्रो के समापन के समय ता. २९-६-०७ की द्वितीय ज्येष्ठ सुद-१४ के शुभ दिन पर ज्येष्ठा नक्षत्र में मंगल प्रभात में प.पू. बडे महाराजश्री ने अपने वरद् हाथों से परम कृपालु श्री नरनारायणदेव की बहुत ही श्रद्धा-भाव से पवित्र और सुगंधित-केसर के जल से अभिषेक करके सभीदर्शनार्थी संत-हरिभक्तो को दर्शन का दिव्य लाभ दिया था। अभिषेक-आरती-पूजन अर्चन के बाद श्री नरनारायणादिक देवो के किंमती वस्त्र अलंकार तथा महा भोग अर्पण किया गया था।

यजमान परिवार अभिषेक के बाद बैठक में प.पू. बडे महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके एवं विशाल संख्या में पधारे हरिभक्तने टाकुरजी के दर्शन करके धन्य हो गये थे।

-कोठारी सत्यप्रकाशदासजी

कर्मशक्ति मंदिर का ८वाँ पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा हरिभक्तो के साथ सहकार से यहाँ कर्म शक्ति मंदिर का ८वाँ पाटोत्सव ता. ५-६-०७ के दिन धूमधाम से मनाया गया।

इस प्रसंग के उपलक्ष में श्रीमद् सत्संगीजीवन रात्री सप्ताह पारायण कथा पूज्य महंत स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुई थी। इस के अलावा महापूजा, अन्नकूट तथा पोथीयात्रा, सांस्कृतिक प्रोग्राम किये गये थे। कथा पारायण में श्री नरनारायणदेव प्रतिष्ठा श्री घनश्याम महाराज का जन्मोत्सव, गादी अभिषेक आदि उत्सवों को धूमधाम से मनाया गया।

इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरूपा गादीवालाश्रीने पधारकर सभी को दर्शन-आशीर्वाद अलौकिक सुख प्रदान किया था। धामधाम के संत अहमदाबाद, कांकरिया, मथुरा, बापुनगर तथा कोटेश्वर से पधारे थे।

प.पू. बडे महाराजश्रीने अलौकिक आशीर्वाद में बताया कि कुछ संत श्रीजी महाराज के सर्वोपरि के बल पर स्वयं श्रीजी महाराज द्वारा स्थापित श्री नरनारायणदेव तथा श्री लक्ष्मीनारायण को आगे रखकर तथा अपने त्याग वैराग्य की प्रधानताको दर्शाकर कुछ हरिभक्तों को भ्रमित करके गलत राह पर भटका देते हैं। व्यक्ति पूजा में ध्यान केन्द्रित करवा देतें हैं। हमें महाराज नरनारायणदेव साक्षात् स्वरूप में प्राप्त है। इस हेतु से ग.म.प्र. ४८ का विवेचन करके प.पू. बडे महाराजश्रीने श्री नरनारायणदेव की विशेष महिमा समजाया।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वचन में बताया कि श्रीहरि मंदिरो में प्रतिष्ठा करने पधारते तब अपने हाथ में पकडी हुई लकडी से काष्ट या पथ्थर के पुतलों को स्पर्श मात्र से ही सजीव कर देते थे। जिसे - जिसे श्रीहरि की लकडी का स्पर्श हुआ तथा जिस के जीवन में भगवान का संबंध है ऐसे मनुष्य सजीव पुतले ही तो हैं। जिसके जीवन में भगवान केन्द्र स्थान पर है ऐसे मनुष्य यथार्थ में जीवन व्यतित करते हैं। इसीलिए भगवान के समीप रहना चाहिए।

पारायण के मुख्य यजमान पद पर प.भ. दिनेशभाई दुर्लभभाई सावलिया तथा अन्य कई भाविक भक्तोंने सेवामें लाभ लिया था। इस प्रसंग पर मंदिर के ट्रस्टी मंडलने श्री स्वामिनारायण म्युझियम निर्माण में सुंदर योगदान प्रदान किया था।

- गोरधनभाई सीतापरा

जेतलपुर धाम में अधिक महिने का पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया

सर्वोपरि तीर्थधाम जेतलपुर में श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज के शुभ सानिध्य में तथा पू. महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से, पू. महंत शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. पी.पी. स्वामी की शुभ प्रेरणा से और महंत स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से अधिक महीने में आनेवाले उत्सव यहाँ धूमधाम से मनाये गये। जिस में से जेठ वद-८ के दिन ठाकुरजी का पाटोत्सव तथा उसके उपलक्ष में ता. ७-६-०७ किया गया था। जिसमें १२१ यजमान हरिभक्तोने दिव्य लाभ लेकर जीवन धन्य बनाया था। ता. ८-६-०७ के प्रातः ६-३० बजे श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार महाभिषेक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से वेदविधिपूर्वक संपन्नहुआ था। जिस के दर्शन हजारों भाविक भक्त किये थे। इस प्रसंग पर ठाकुरजी का शिंगार तथा अन्नकूट की आरती प.पू. आचार्य महाराजश्रीने उतारी थी। उसके बाद प्रासंगिक सभा में पाटोत्सव के यजमान अ.नि. प.भ. काशीभाई चतुरभाई तथा गं.स्व. गंगाबहन काशीभाई परिवार के प.भ. महेशभाई काशीभाई, श्री विपुल महेशभाई, श्री कौशल महेशभाई तथा चि. मानव और चि. भव्य आदि परिवारने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बडे महाराजश्री का पूजन-अर्चन आरती करके आशीर्वाद प्राप्त किये थे। उसके बाद खावर (कच्छ) सत्संग समाज के तरफ से श्री स्वामिनारायण म्युझियम निर्माण में रु ५,५५,५५५-०० प.पू. बडे महाराजश्री को खावर के हरिभक्तोंने अर्पण करके आशीर्वाद प्राप्त किया था। पू. पी.पी. स्वामीने सभा संचालन में श्री स्वामिनारायण म्युझियम की प्रवृत्ति तथा निर्माण कार्य की हलकी झलक सभी को समजायी थी। अंत में श्रीहरि के दोनो अपर स्वरूपोने संत हरिभक्तो को दिव्य आशीर्वाद प्रदान किया था।

प. भक्तिनंदनदास

जेतलपुर धाम [illegible] के कष्टभंजन देव के चमत्कारीक दर्शन की लीला

तीर्थधाम जेतलपुर में भगवान श्री स्वामिनारायण का [illegible] निवास स्थान पवित्र देव सरोवर के [illegible] न'' अक्षर महोल अत्यंत पावन भूमि है। [illegible] श्रीहरि ने वचनामृत सहित अनेक चरित्रो [illegible] रचना की है। तथा जीवण नामक भक्त के हाथोंकी रोटी भी खाई। यहाँ आदि आचार्य

महाराजश्री प.पू.ध.धु. १००८ श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्रीने कुलदेव हनुमानजी की स्वहाथों से स्थापना की थी। जेतलपुर धाम में बिराजमान श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण माराज प्रगट स्वस्म प्रत्यक्ष सभी की मनोकामनायें पूर्ण करते है। महोल में बिराजमान कष्टभंजनदेव की मूर्ति का प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञा से पुनः रंगकाम करने के कारण पुनः प्राण प्रतिष्ठा प्रसंग पर मासतियज्ञ वैशाख सुद-१४ पूर्णिमा के मंगल दिवस पर किया गया था । प.पू.ध.धु. १००८ बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पुनः प्रतिष्ठा विधिहे तु महोल में पधारे तब भगवान श्री स्वामिनारायण की कृपा से कष्ट भंजनदेव अपने प्रत्यक्ष होने का प्रमाण भक्तों को दिया था । प.पू. आचार्य महाराजश्री द्वारा प्राण प्रतिष्ठा होने के बाद कष्टभंजनदेव के मुख में से श्रीराम..... श्रीराम..... श्रीराम..... ऐसे स्वर के साथ वाद्ययंत्रो की ध्वनि तथा मुखारविंद द्वारा जप करते हुए दर्शन होने लगे । इस दिव्य दर्शन का वर्णन यजमान श्री जनकभाई गोकलभाई पटेलने (लवारपुरवाले) मोबाईल फोन में VDO केमेरा से रेकोर्ड किया । आधे घंटे तक मुखारविंद पर जप करते हुए भगवान के दर्शन निरंतर होते रहे। पूर्णिमा के दिन हजारो हरिभक्त कष्टभंजनदेव के दर्शन करने आये थे । महाप्रतापी श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज तथा कष्टभंजनदेव प्रत्यक्ष दर्शन देकर भक्तो को अमूल्य लाभ प्रदान किये थे । इस दिव्य दर्शन की VCD जेतलपुर मंदिर के साहित्य केन्द्र में से मिलती है। *- पी.पी. स्वामी, जेतलपुर*

कांकरिया में श्रीमद् सत्संगिजीवन की सप्ताह कथा-पारायण

पवित्र अधिक महीने में पवित्र कांकरियां मदिर में महंत शा. स्वामी गुरुप्रसाददासजी तथा मथुरा महंत शा. आनंदप्रसाददासजी के अथक परिश्रम से सुंदर रात्री पारायण का आयोजन किया था। अहमदाबाद मंदिर के महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी ने अपनी भाववाही शैली में सुंदर कथामृत का रसपान करवाकर सभी को प्रसन्न कर दिया था । सभा संचालन यज्ञप्रकाश स्वामीने किया था । विविध यजमान परिवारने प्रतिदिन अल्पाहार-फलाहार तथा विविध सेवा का लाभ प्राप्त किया था । कथा के प्रारंभ में प.पू. बडे महाराजश्री तथा समापन के समय पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे । ता. १३ जून को मासतियज्ञ का सुंदर आयोजन किया गया था । कई हरिभक्तोने यजमान पद का लाभ लिया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने अपने वरद् हाथों से श्रीफल हवन मे चढाकार पूर्णाहुति की थी । ता. १२-६-०७ उनावा मंदिर में महोत्सव प्रसंग पर सेवा करने वाले स्वयं सेवकों का प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने सन्मान करके आशीर्वाद प्रदान किया था । *- गौरांग पटेल*

धरियावद (राजस्थान) श्री स्वामिनारायण मदिर

धरियावद के पास म्याला गाँव के (जिला डुंगरपुर) प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण ता. २०-५-०७ से ता. २६-५-०७ तक महंत स्वामी वासुदेवचरणदासजी के वक्ता पद हुई थी । जिस के यजमान यहाँ के सरपंच श्रीनारायण लालजी मीणा तथा सह यजमान प्रकाशजी आहीरी थे । इस प्रसंग पर कथा का लाभ आस-पास के भक्तजनो ने लिया था । श्री शंभुजी चौहाण तथा परबतसिंहजी की सेवा प्रशंसनीय थी । साधु सुखनंदनदास तथा गणपत भगत, हार्दिक भगत की सेवा भी प्रसंशनीय थी । *- करन भगत*

घाटलोडीया श्री स्वामिनारायण मंदिर

घाटलोडीया श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से अधिक ज्येष्ठ महीने में रात्री सत्संग सभा रात में ८-३० से १०-३० बजे रखी गयी थी । जिस में अहमदाबाद मंदिर से को.सत्यप्रकाश स्वामी, विश्ववल्लभ स्वामी, भक्तिवल्लभ स्वामी, जमीयतपुरा से पू. धनश्याम स्वामी, कलोल से शा. प्रेमस्वस्म स्वामी, जयदेवपुरा के कृष्णस्वस्म स्वामीआदि संतोने कथा का लाभ प्रदान किया था ।

घाटलोडीया विस्तारमें हर रविवार को रात्रि ९ से १०-३० हरिभक्तो के घर सत्संग सभा का सुंदर आयोजन करके कीर्तन-भक्ति कथावार्ता तथा जनमंगल पाठ तथा नित्य-नियम किया जाता है । प्रथम सभा में प.पू बडे महाराजश्री पधारे थे तथा आशीर्वाद देकर बहुत ही प्रसन्न हो गये थे । सभा का संचालन प्रो. शनाभाई पटेल साहबने किया था ।

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सभा हर शनिवार की रात्री में ८-३० से १०-३० को होती है । जिस में २५-३० युवान सत्संग सभा का लाभ लेते हैं । संचालन श्री दिनेशभाई एम. पटेल संभालते हैं । जिससे युवान बहुत ही प्रोत्साहित होते है । हर रविवार की सुबह ८ से १० बच्चों के लिये बाल सभा आयोजन वास्तव में प्रेरणास्म है । जिस में कीर्तन-प्रश्नोतरी आरती आदि संप्रदाय के मूलभूत सिद्धांतो तथा संप्रदाय की मूल परंपरा को समजाया जाता है । बच्चों के प्रोत्साहन हेतु प्रसाद तथा स्टेशनरी की सामान भेट के स्म में प्रदान की जाती है । जिसका संचालन पटेल प्रहलादभाई टी. तथा बाबुभाई एच. पटेल कुशलता पूर्वक करते हैं ।

अधिक महीने में पूर्णाहुति प्रसंग पर प्रातः ५ से ११ बजे महामंत्र धून में ३०० हरिभक्तोने श्रीहरि स्मरण करके अंत में सभी भक्तों के लिये प्रभुदासभाई पटेल (सोजा तथा गीरधनरभाई पटेल (भाणपुरावाले) की तरफ से प्रसाद का आयोजन किया गया था । धून का संचालन कांतिभाई पटेलने किया था । *- प्रविणभाई टी. पटेल*

साणंद में कथा पारायण

श्री नरनारायणदेव ताबा के हमारे साणंद मंदि रमें सभी सत्संगी हरिभक्तों की भावनाओं को ध्यान में रखकर पवित्र अधिक महीने मे श्रीमद् सत्संगिजीवन की कथा ता. १३ से ता. १५ जून का रात्री कथा का सुंदर आयोजन किया गया था । अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजीने अपनी विद्वतापूर्ण सुमधुर शैली में लाभ प्रदान करके सभी सत्संगी हरिभक्तों को प्रसन्न कर दिया था ।

- पार्षद भूरा भगत

एप्रोच (बापुनगर) मंदिर षडक्षरी महामंत्र की धून

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से ज्येष्ठ सुद-१० सर्वावतारी इष्टदेव श्री स्वामिनारायण महाप्रभु के अंतर्धान तिथि के निमित्त पर ५

घंटे की अखंड स्वामिनारायण महामंत्र की धून का आयोजन किया गया था। जिसका लाभ बडी संख्या में हरिभक्तोने लिया था।

- गोरधनभाई सीतापरा

भावनगरपुरा (प्रतापपुरा) पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा अ.नि.पू. स.गु. शास्त्री स्वामी देवचरणदासजी (वे.ल्या.आ) की दिव्य प्रेरणा से यहाँ भावनगरपुरा हरिमंदिर में श्री घनश्याम महाराज, श्री नरनारायणदेव, श्री राधाकृष्णदेव, श्री हनुमानजी महाराज, श्री गणपति महाराज की पुनः प्राण प्रतिष्ठा चैत्र सुद-१२ ता. ३०-३-२००७ के दिन प.पू.ध.धु. महाराजश्री के शुभ हाथों से धूमधाम से संपन्न हुई।

इस प्रसंग के उपलक्ष में श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण शा. स्वामी घनश्यामप्रकाशदासजी (जमीयतपुरा) के वक्तापद पर संपन्न हुई। यजमान परिवारोंने प.पू.धधु. आचार्य महाराजश्री का पूजन अर्चन करके आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किया था। अंत में समस्त सभा को प.पू. महाराजश्रीने दिव्य आशीर्वाद प्रदान किया था। इस प्रसंग की सेवा में पू. शास्त्री स्वामी के शिष्य स्वामी पुस्योत्तमदासजी, साधु नारायणप्रसाददासजी, साधु विजयप्रकाश-दासजी तथा गाँव के समस्त हरिभक्तों की सेवा प्रशंसनीय थी। जमीयतपुरा से साधु पूर्ण प्रकाशदास तथा शा. भक्तिकेशवदासने अच्छी सेवा की थी।

- कोठारीश्री भावनगरपुरा

श्री नरनारायणदेव सत्संग मंडल नरोडा

अहमदाबाद के आदिश्वर नगरश्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा नरोडा के समस्त हरिभक्तो के सहकार से अधिक ज्येष्ठ वद-२ से अधिक ज्येष्ठ वद-३ तक रात्रि में ९ से ११ तक श्रीमद् भागवत समाह पारायण श्री अरविंदभाई शास्त्री के वक्तापद पर संपन्न हुई थी। इस प्रसंग पर हमारे सभी श्रद्धालु प्रेमी हरिभक्तोने कथा का लाभ लिया था। सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के निष्ठावान हरिभक्तो ने यहाँ नियमित मंदिर का लाभ लिया है। इस प्रसंग में श्री कांतिकाका तथा श्री भगवानभाई पटेलकी सेवा प्रेरणास्त्र थी।

- ठाकरसीभाई चावडा

हर्षद कोलोनी (बहनो के) मंदिर में स्वामिनारायण महामंत्र की धून

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वस्मा गादीवालाश्री कीआज्ञा-आशीर्वाद से तथा यहाँ के मंदिर के पूजारी गं.स्व. रलिया तबाकी प्रेरणा से ज्येष्ठ सुद-१० ता. २५-६-०७ के दिन श्रीहरिकी अंतर्ध्यान तिथी के निमित्त पर बहनो ने दोपहर के १ से ६ बजे तक अखंड ५ घंटे की स्वामिनारायण धून की थी। इस प्रसंग में बडी संख्या में बहनोने लाभ लिया था।

- गोरधनभाई सीतापरा

हरिपुरा (ईडरदेश) में नूतन मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. स्वामी भक्तिप्रकाशदासजी कीप्रेरणा से तथा संत हरिभक्तों के सहकार से संप्रदाय में ५ नये हरिपुरा (खास्की) गाँव में नूतन हरिमंदिर का भव्य निर्माण पूर्ण होने के कारण मूर्ति पूजा के उपलक्ष में ता. २-६-०७ से ता. ४-६-०७ तक त्रिदिनात्मक दशम स्कंध पारायण, यज्ञ तथा महापूजा वेद-विधिपूर्वक की गई। कथा के वक्तापद पर शा.स्वामी हरिजीवनदासजी शास्त्री स्वामी विश्वप्रकाशदासजीने सुंदर कथामृत पान करवाया था। ता. ४-६-०७ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। संत हरिभक्तोने ठाकुरजी की मूर्ति प्रतिष्ठा अपने वरद् हाथों से विधिपूर्वक की थी। उसके बाद यज्ञ, महापूजा तथा कथा की पूर्णाहुति आरती उतारकर की थी।

इस प्रसंग में अहमदाबाद, ईडर तथा हिंमतनगर के संतोने पहले से पधारकर भक्ति स्वामी के साथ विविध सेवा में योगदान दिया था। सत्संग में एक नये गाँव में ऐसा सुंदर मंदिर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से प्रतिष्ठित होने के कारण श्री नरनारायणदेव के कई नये आश्रित बने हैं।

- विपुल भगत

ऊँझा में भागवत पारायण

श्रीहरि के प्रसादीवाले ऊँझा गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बडे महाराजश्री की शुभ आज्ञा आशीर्वाद से अ.नि. प.भ. पटेल मूलंचददासभाई भाईचंददास गोदड तथा अ.नि. शीवीबहन मुलचंददास गोयड के स्मरण हेतु उनकी सुपुत्री अ.सौ. हेमीबहन लक्ष्मणभाई नुंगरा के संकल्प से अधिक ज्येष्ठ सुद-१५ ता. १-६-०७ से ता. ७-६-०७ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण का आयोजन ऊँझा के समस्त हरिभक्तो के साथ सहकार से किया गया था।

"पारायण के वक्तापद पर संप्रदाय के विद्वान कथाकार पूज्य शास्त्री स्वामी पुस्योत्तमदासजी (जेतलपुर) (पी.पी. स्वामी) ने व्यास आसन पर बिराजमान होकर सुमधुर शैली में संगीत कीसुरावली के साथ कथा का रसपान करवाया था। हजारो भक्तजन कथा का लाभ लेकर धन्य हो गये थे। कथा में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव रुक्मिणीविवाह आदि प्रसंग धूमधाम से मनाया गया। ता. ५-६-०७ रात्रि में "मा-बाप को भूलना नही चाहिये" कार्यक्रम का आयोजन किया गया था।

इस प्रसंग पर ता. ७-६-०७ को अहमदाबाद से हमारे प्राण प्यारे विश्व वंदनीय परम पूज्य आचार्य महाराजश्री पधारे थे तब भव्याति भव्य शोभायात्रा में अलौकिक दर्शन करके भक्तजन आनंद विभोर हो गये थे। वहाँ से सीधे मंदिर में पधारकर ठाकुरजी की आरती उतारकर कथा मंडपमें पधारे थे। जहाँ यजमान परिवारो ने प.पू. आचार्य महाराजश्री के चरण स्पर्श करके आशीर्वाद लिये थे।

- पटेल महेन्द्रकुमार एल.

उवारसद गाँव में भागवत पारायण

उवारसद गाँव में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा शास्त्री स्वामी छपैयाप्रसाददासजी कीप्रेरणा से अ.नि.प.भ. भुलाभाई भगवानदास पटेल के स्मरणहेतु उनके सुपुत्र श्री केशवलाल भुलाभाई पटेल की तरफ से श्रीमद् भागवत पंचान्ह परायण का आयोजन किया गया था। जिसके वक्तापद पर शास्त्री स्वामी विश्वप्रकाशदासजीने सुंदर कथामृत का पान करवाया था।

ता. १३-५-०७ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री पधारे थे। तथा दोनो मंदिरो में आरती उतारकर कथा की पूर्णाहुति की थी। सभा में यजमान परिवारने प.पू.ध.धु.

आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके आरती-उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किया था।

अधिक महिने में श्री स्वामिनारायण म्युझियम के दिव्य प्रांगण में रात्री कथा पारायण

प.पू. बडे महाराजश्री का अलौकिक संकल्प श्री स्वामिनारायण म्युझियम के दिव्य प्रांगण में प.पू.ध.धु. महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से पवित्र अधिक महीने में ता. ७-६-०७ से ता. १५-६-०७ तक रात्रि में ८-३० से ११-०० बजे तक श्रीमद् सत्संगिभूषण कथा पारायण स.गु. स्वामी श्रीजीप्रकाशदासजी के वक्तापद पर हुई थी।

कथा के प्रारंभ दिन पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने पधारकर दिव्य आशीर्वाद दिया। प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्रीने भी पधारकर आशीर्वाद लाभ प्रदान किया था। धामोधाम से कई विद्वान संगतण पधारे थे। पारायण की अन्य सेवा में स्वामी रामकृष्णदासजी कोठारी स्वामी चंदप्रकाशदासजी, पूजारी स्वयंप्रकाशदासजी, स्वामी धर्मस्वरूपदासजी (नाथद्वारा) तथा केशव भगत आदि सभी की सेवा प्रसंशनीय थी। पारायण के मुख्य यजमान पद पर श्री घनश्यामभाई भगवानदास पटेल (करजीसण) तथा सहयजमान श्री जयंतीभाई सांकलचंद पटेल (विहार) विराजे थे। इस प्रसंग पर कुछ हरिभक्तोंने स्वामिनारायण म्युझियम के लिए अपनी सेवा लिखवाई थी। सभा संचालन श्री घनश्यामभाई पटेल (उवारसद)ने किया था। *- साधु प्रियदर्शन*

कृष्णनगर कटोसण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की शुभ आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर की पुनः प्रतिष्ठा ता. १७-६-०७ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके वरद् हाथों से धूमधाम से संपन्न हुई। इस प्रसंग पर गाँव की तरफ से श्री स्वामिनारायण म्युझियम निर्माण में सेवा अर्पण विधि प्रसंग पर प.पू. बडे महाराजश्री हरिभक्तों के प्रेम भरे आग्रह के वश होकर पधारे थे। सभा में गाँव के हरिभक्तने प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आरती उतारकर आशीर्वाद प्राप्त किये थे। अंत मों समग्र सभा को आशीर्वाद देते हुए कहा की छोटे गाँव में भी ऐसी भावना युक्त प्रसंग प्रशंसनीय है। ईस कारण हमें बहुत आनंद हुआ है। प.पू. बडे महाराजश्री ने आशीर्वाद देते हुए कहा की पैसों से अधिक भावनाओं का महत्व होता है। आप सभी लोग सुखी हों ऐसी प्रार्थना है। समग्र प्रसंग में पूजारी स्वामी परमेश्वरदासजी तथा टोरडा, ईडर के महंत स्वामी तथा आदि संतो की सेवा प्रेरणास्य थी। *- साधु सत्यसंकल्पदास, ईडर*

मारूसणा मंदिर में पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कीआज्ञा आशीर्वाद से तथा संप्रदाय के सुप्रसिद्ध मूर्धन्य विद्वान पू. शास्त्री स्वामी हरिकेशवदासजी तथा अ.नि. स.गु. स्वामी कृष्णजीवनदासजी के समस्त मंडल के संतो की प्रेरणा से तथा मारूसणा गाँव की तरफ से ज्येष्ठ सुद-२ को श्री स्वामिनारायण मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर प.पू. महाराजश्रीने पधारकर ठाकुरजी की आरती उतारकर सभी भक्तो को दिव् लाभ प्रदान किया था। प्रासंगिक सभा में गाँव के धर्मकुल प्रेमी हरिभक्तोने प.पू. बडे महाराजश्री की आरती उतारी थी। उसके बाद स्वामिनारायण म्युझिम में योगदान प्रदान करनेवाले हरिभक्तों को महाराजश्री दिव्य आशीर्वाद दिये थे। प.पू. बडे महाराजश्रीने आशीर्वचन में कहा कि इस गाँव के लोगों ने हमे सामने से बुलाकर जिस भावना से म्युझियम की सेवा में योदान दिया है उसमे हम बुहत ही प्रसन्न हैं। तथा श्री नरनारायणदेव आप सभी पर प्रसन्न हो ऐसी शुभ कामना। समग्र प्रसंग में महंत स्वामी कृष्णप्रसाददासजी (टोरडा) शा.स्वा. रघुवीरचरणदासजी (शोकली) महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी (ईडर) तथा पूजारी परमेश्वर स्वामी प्रेरणास्य थे। *- शा. आनंदजीवनदास*

कालियाणा

गाँव कालियाणा के श्री स्वामिनारायण मंदिर में अधिक ज्येष्ठ वद-११ के सोमवार की कमला एकादशी के दिन सुबह ७-३० से साम के ७-३० तक १२ घंटे की श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून सत्संगियों के सहकार से की गई थी। *- कोठारीश्री*

प्रांतिज में मूर्ति प्रतिष्ठा तथा पाटोत्सव

प्रांतिज बाईओं के श्री स्वामिनाराण मंदिर में श्री घनश्याम महाराज की प्राण प्रतिष्ठा ज्येष्ठ सुद-२ के दिन की १२० वें पाटोत्सव के प्रसंग पर ठाकुरजी तथा घनश्याम महाराज आदि देवों का षोडशोपचार महाभिषेक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने वेद विधिपूर्ण किया। घनश्याम महाराज की मूर्ति के यजमान अ.नि. दिपलभाई किशोरभाई शाह परिवार के किशोरभाई शाह बने थे। समग्र उत्सव के यजमानश्री हसमुखभाई कचराभाई भावसार परिवार तथा उत्सव के छोटे-बडे यजमानों को प.पू. महाराजश्रीने आशीर्वाद दिया। मंदिर के ट्रष्टियोंने पू. महाराजश्री का पूजन-आरती किया। धामोधाम से पधारे हुए संतगण तथा महंतश्रीने प्रासंगिक प्रवन किया। *- कोठारी हरिभाई*

मूली प्रदेश सत्संग वृत्तान्त

जीरागढ के (मुंबई-विर्ले-पार्ले) हरिभक्तों के यहाँ कथा पारायण

फिलहाल मुंबई विर्ले पार्ले वर्षो से व्यापार के हेतु स्थायी हुए अ.नि. प.भ. रामजीभाई लक्ष्मणभाई चौहाण परिवार के गं.स्व. कौशल्याबहन रामजीभाई चौहाण तथा सुपुत्र श्री राजुभाई, श्री दिलीपभाई, श्री रमेशभाई तथा श्री महेशभाई तथा हितार्थकुमार की तरफ से प.भ. रामजीभाई के स्मरण हेतु ता. १०-४-०७ से १६-४-०७ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण का आयोजन किया गया था। परिवार के आग्रहपूर्वक आमंत्रण के कारण ता. १४-४-०७ के दिन प.पू. बडे महाराजश्री तथा १६-४-०७ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा समस्त बहनो की गुरु प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरूपा गादीवालाश्री पधारी थीं। परिवार जनोनें धर्मवंशी का पूजन अर्चन करके आरती उतारी थी। श्रीहरि के दोनो अपर स्वरूपो ने रामजीभाई के परिवार पर प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया था। इस प्रसंग पर महंत स्वामी ज्ञानवल्लभदासजी, शा. स्वामी नारायणप्रसाददासजी, सापावाडा महंत स्वामी प्रेमस्वरूपदासजी स्वा.

प्राणजीवनदासजी तथा शा. स्वामी गोविंदप्रसाददासजीने उपस्थित रहकर कथा वार्ता का लाभ प्रदान किया।

- महंत स्वामी, मूली

सुरेन्द्रनगर मंदिर में अधिक महीने में मनाये गए उत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा यहाँ के महंत स्वामी प्रेमजवीनदासजी की प्रेरणा से हरभक्तो के साथ सहकार से पवित्र अधिक पुरुषोत्तम महीने में वर्ष के पूर्ण उत्सवों को मंदिर में ठाकुरजी के समक्ष भव्यता से श्रद्धा भक्ति पूर्वक पुजारी स्वामी विश्वस्वरूपदासजी तथा भक्ति स्वरूपदासजीने करवाये थे। समग्र महीने में शा. सुव्रत स्वामीने श्रीमद् सत्संगिभूषण ग्रंथ की सुंदर कथा करके हरिभक्तों को दिव्य लाभ दिया। शा. स्वा. प्रेमवल्लभदासजीकी प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव युवक मंडलल की सेवा अद्‌भुत थी। *- शैलेन्द्रसिंह झाला*

लीमडी तपोवन मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से पवित्र अधिक पुरुषोत्तम महीने में (श्री राधाकृष्णदेव मूली ताबा के) यहाँ के मंदिर में संप्रदाय के मान्य साधु भक्तवत्सलदासने शास्त्रो की कथा की थी। हरिभक्तोंने समूह महापूजा-आरती की थी। *- साधु वंदनप्रकाशदास*

विदेश सत्संग वृत्तान्त

वोशिंग्टन डी.सी. (I.S.S.O. चेप्टर)

बुवी मेरीलेन्ड में १२ मई के शनिवार की सांम को ३ बजे ठाकुरजी समक्ष कथा-वार्ता भजन-भक्ति तथा २७३ वचनामृत का अमृतपान तथानित्य नियम हरिभक्तोने बडी संख्या में सत्संग सभा का लाभ लिया था। परम पूज्य दोनो आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग की प्रवृत्ति अच्छी चल रही है। *- कनुभाई पटेल*

डीट्रोईट श्री स्वामिनारायण मंदिर (I.S.S.O., U.S.A.)

प.पू. आचार्य महाराजश्री की कृपा से डीट्रोईट श्री स्वामिनरायण मंदिर में सुंदर उत्सव मनाया गया। पवित्र पुरुषोत्तम महिना (अधिक महिने) में तीन दिन तक जून-१ से जून्-३ तक श्री घनश्याम बाल चरित्र कथा का सुंदर भव्य आयोजन किया था। वक्तापद पर शास्त्री स्वामी घनश्यामदासजीने व्यासासन पर विराजमान होकर कथामृत का पान करवाकर हरिभक्तों को भक्तिरस में मग्न कर दिया था। डिट्रोईट मंदिर के महंत स्वामी केशवचरणदासजीने श्रीहरि के तथा धर्मकुल महात्म्य के विषय में सुदंर प्रवचने किया ता। इस प्रसंग पर बोस्टन से हरिप्रकाश स्वामी तथा फ्लोरिडा से योगी स्वामी पधारे थे। कई हरिभक्तोने यजमानपद पर रहकर कथा का लाभ लिया था। कथा श्रवण करने हेतु दूर-दूर से हरिभक्त पधारे थे। कथा के मुख्य यजमान पद का कांतिभाई पटेलने लाभ लिया था। *- डो. अरविंदभाई पटेल, प्रेसीडेन्ड डिट्रोईट मंदिर*

(I.S.S.O., U.S.A.) संचालित SEVA की प्रवृति

श्री नरनारायणदे पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बडे महाराजश्री की आज्ञा-प्रेरणा तथा आशीर्वाद से अमेरिका में हमारे I.S.S.O. द्वारा अंतिम २ वर्षो से "सेवा" संस्था की प्रवृति उत्तरोत्तर बढती ही जा रही है।

जिस में न्युजर्सी तथा ह्युस्टन टेकसास में २ क्लिनिक शुरु किये गये है। जिसके एकझिक्युटीव बोर्ड के सदस्य डो. ज़िश शाह हैं। इस क्लिनिक में सभी क्षेत्र के निष्णांत डोक्टर अपनी सेवा प्रदान करते हैं। (डो. जिज्ञेश शाह) अंतिम २ वर्षो से ३००० से भी अधिक लोग हमारी सेवा संस्था को किसी भी प्रकार से आरोग्य लक्षी सेवा प्रदान करते हैं। - प्रविण चोपडा

I.S.S.O. श्री सेवा संस्था का मुख्य हेतु मानवीय स्वास्थ्य सेवा है। इस क्षेत्र में फिजिशियन, नर्सिस, डेन्टीस, फार्मासिस्टस तथा ओप्टोमेट्रीस्टस जैसे हेल्थकेर के निष्णांत स्वेच्छा से अपनी सेवा प्रदान करते हैं। जिसका कारण हमारे दोनो परम पूज्य आचार्य महाराजश्री का प्रभाव है। कोलोनिया में क्लिनिक की शुरुआत इ.स. २००५ में हमारे इसो के श्री स्वामिनारायण मंदिर में कि गई थी। जिस में हर दूसरे तथा चौते शनिवार की सभा के समय साम को क्लिनिक चालु रखना है।

लुई विले के वाय में प्रेक्टीस करनेवाले बालरोग निष्णांत डो. शाह के अभिप्राय के अनुसार, जिन लोंगो के पास अंग्रेजी भाषा का ज्ञान नहीं है, आर्थिक समस्या है, इन्स्युरन्स नही है वैसे लोगों को हमारी "सेवा" संस्था आरोग्य के लिये अद्‌भुत सेवा प्रदान करती है। मानवसेवा का यह उत्तम उदाहरण है।

शाह के अनुभव अनुसार हमने मंदिर पर आते ही हरिभक्तों का एक सर्वेक्षण किया। क्लिनिक में ब्लड प्रेसर, कोलस्टोल, खून में सुगर की मात्रा जानने के लिए भिन्न-भिन्न टेस्ट किये गये। जिस में २ दाक्टर, २ नर्से तथा २ फार्मासिस्ट अपनी सेवा प्रदान करते हैं। जब मंदिर में उत्सव आदि प्रसंग आते हैं तब बहुत ही भीड होती है। उस समय मंदिर के प्रांगण में तंबु में हेल्थ केम्प में बालरोग, स्त्रीरोग, सर्जरी डेन्टीस्ट्री आदि क्षेत्र के डोक्टरो का मार्गदर्शन तथा दवाओं की सुविधा प्रदान की जाती है।

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

कालियाणा : प.भ. भीखाभाई जेठुभाई बूटीया (उ. ८२ वर्ष) ता. १५-६-०७ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

माधवगढ (प्रांतिज) : प.भ. कांताबहन जसुभाई पटेल ता. २८-४-०७ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हो गयी।

गडाणी (कच्छ) ईन्दौर : प.भ. रामजीभाई हरजीभाई भवाणी ता. ३-६-०७ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हो गये।

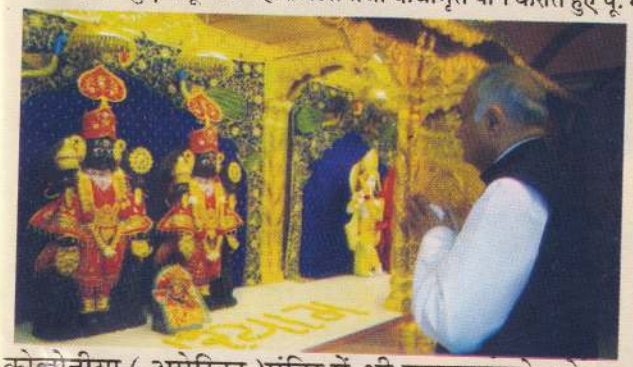
जीरागढ (विर्ले पार्ले मुंबई) : श्री नरनारायणदेव गादी के निष्ठावान तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कृपापात्र अ.नि.प.भ. रामजीभाई लक्ष्मणभाई चौहाण के पौत्र प.भ. हितार्थ राजेन्द्रकुमार चौहाण (उ. २१ वर्ष) ता. १९-५-०७ के दिन अक्षरनिवासी हो गये तथा उस आत्मा को श्रीहरिकी अखंड सेवा का लाभ प्राप्त हो ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना।



अहमदाबाद मंदिर में पारायण प्रसंग पर डो. मनोजभाई को प्रसादी की मूर्ति के साथ आशीर्वाद देते हुए प.पू. बडे महाराजश्री तथा कथामृत पान कराते हुए पू. महंत स्वामी



कांकरिया मंदिर में रात्रि पारायण प्रसंग पर आशीर्वाद देते हुए प.पू. महाराजश्री तथा कथामृत पान कराते हुए पू. महंत स्वामी



कोलोनीया (अमेरिका)मंदिर में श्री नरनारायणदेव के दर्शन करते हुए प.पू. बडे महाराजश्री ।



कोलोनीया (अमेरिका) में I.S.S.O. संचालित "सेवा" संस्था की उत्तरोत्तर प्रगति के लिये डो. जिज्ञेश शाह को आशीर्वाद देते हुए प.पू. बडे महाराजश्री ।



कांकरिया मंदिर में मास्तियज्ञ की पूर्णाहुति की आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा लाभ लेते हुए संतगण ।



श्री स्वामिनारायण म्युझियम में रात्रि कथा के यजमान गण प.पू. बडे महाराजश्री की आरती उतारते हुए ।



श्री स्वामिनारायण म्युझियम के अलौकिक प्रांगण में रात्रि कथा के वक्ता शा.स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी को अति प्रसन्न होकर आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month
under postal Regd. No. GUJ. 581 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-08

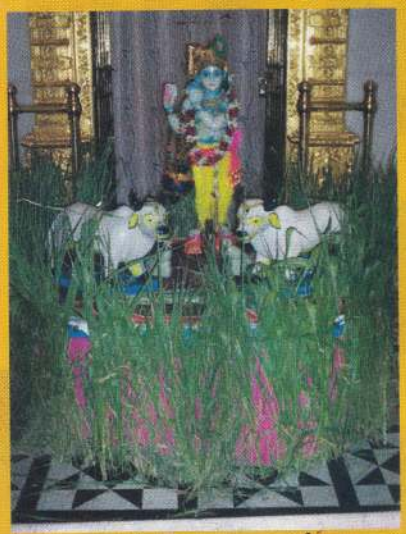
अहमदाबाद मंदिर में अधिक महिने में मनाये गये विविध उत्सवों के अलौकिक दर्शन ।



हिमालय दर्शन



सर्वोपरि छपैयाधाम दर्शन



वृंदावन धाम दर्शन



वसंतोत्सव दर्शन



झुलोत्सव दर्शन



कुंजगली दर्शन



श्रीहरि वनविचरण दर्शन